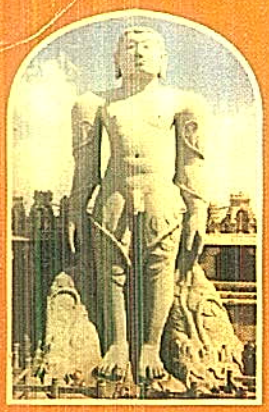

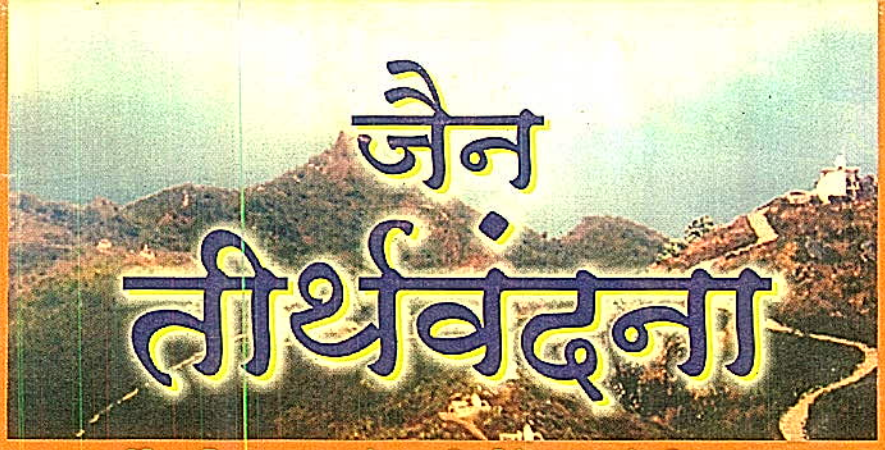

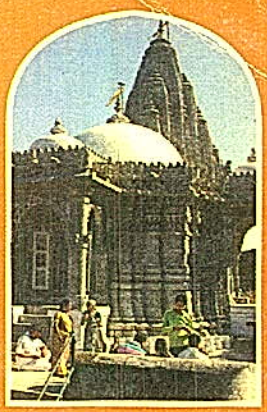

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी का मुखपत्र

VOLUME : V ISSUE : 6 MUMBAI, DECEMBER 2014 PAGES : 36 PRICE :₹25

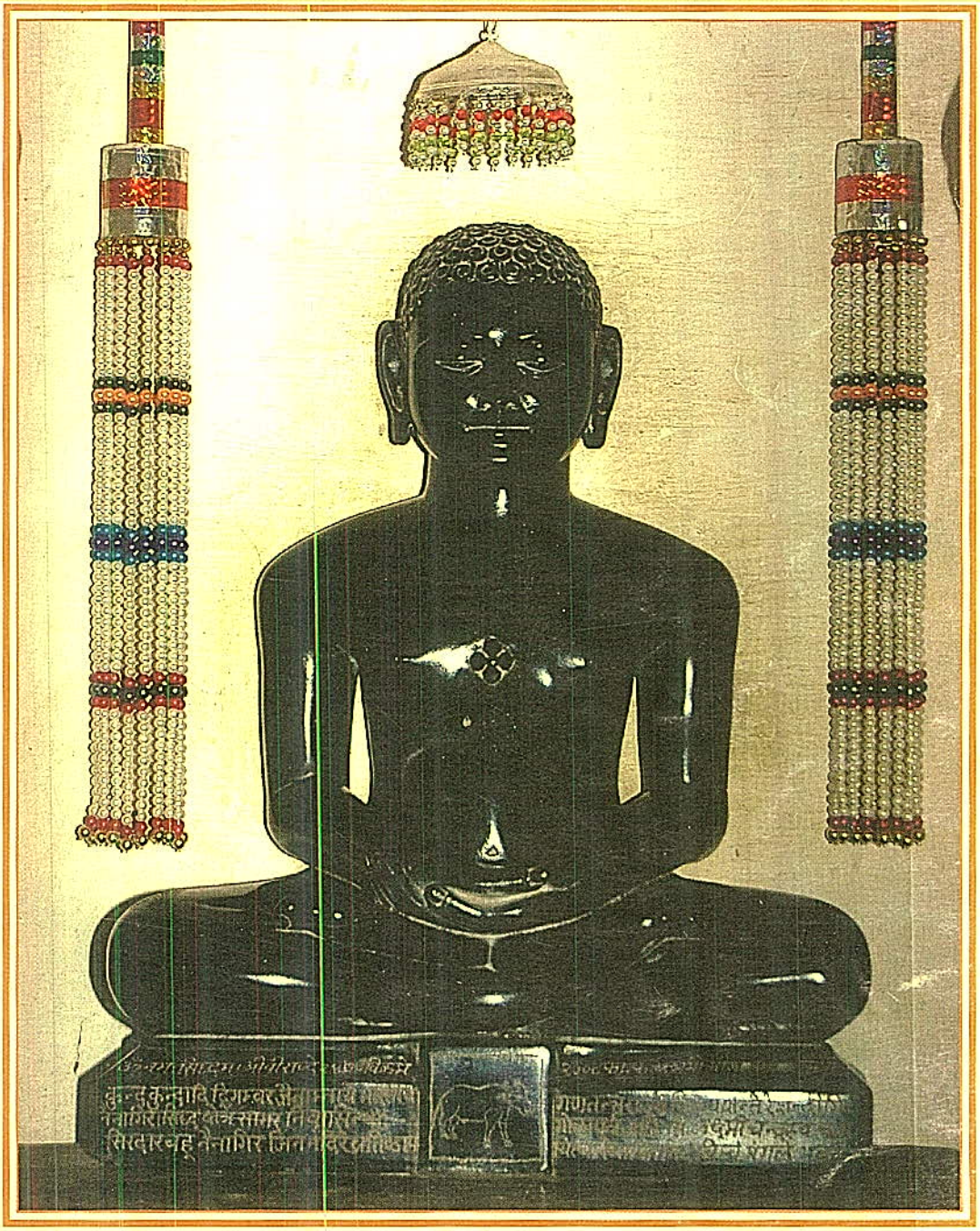

बारहवें तीर्थंकर भगवान श्री वासुपूज्य जी, पपौराजी

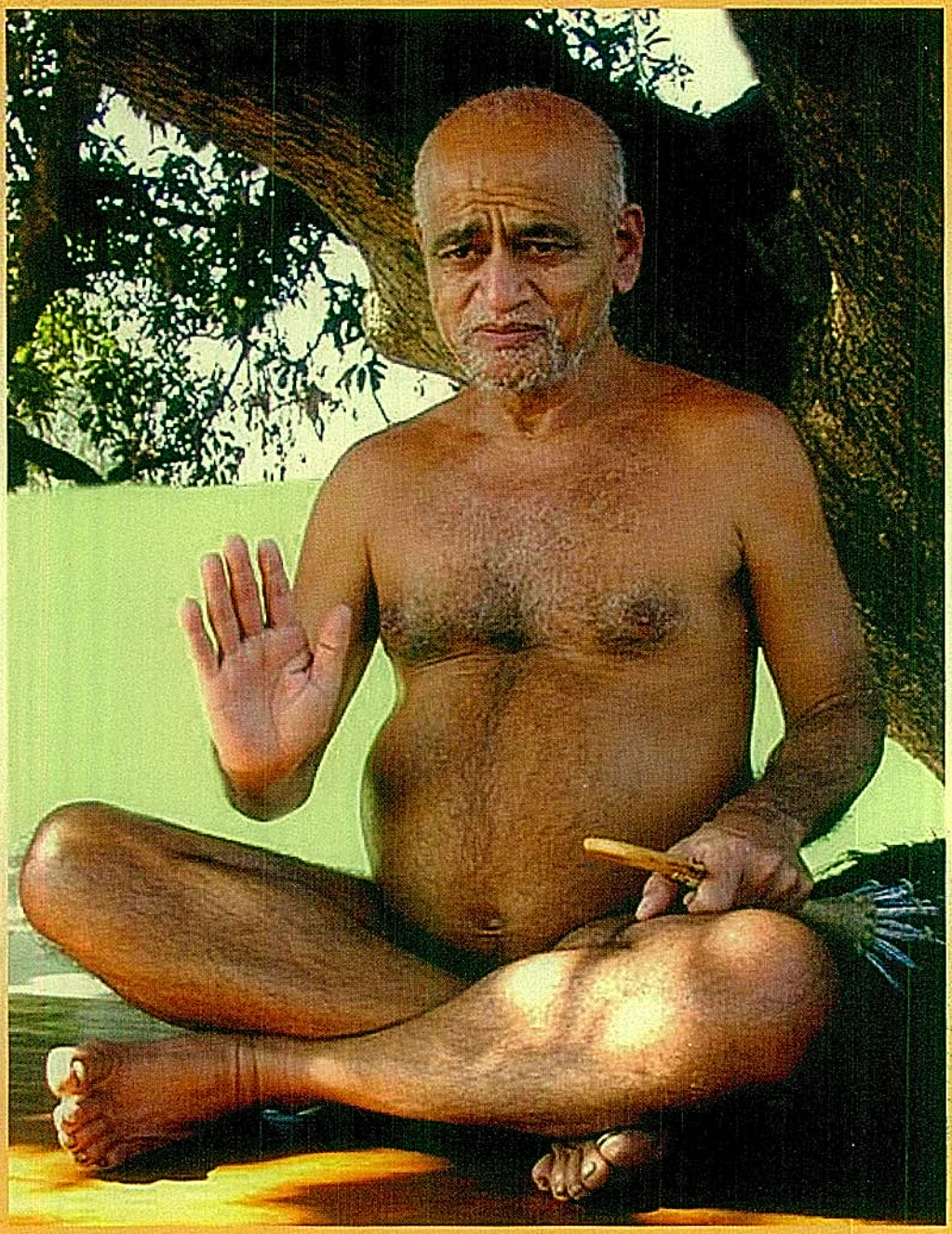

मंत्रों के मेरूदण्ड, द्वादशांग के व्याख्यान आप हैं।
मिटती मानवता के महायान अभियान आप हैं।।
माना कि काल दोष के कारण चौबीसी जन्म नहीं लेती।
लेकिन हम भक्तों को चौबीसी की पहचान आप हैं।।

R.K. MARBLE GROUP

Corporate Office : Makrana Road, Madanganj-Kishangarh, Dist.Ajmer(Raj.)-305801
Tel : +91 1463 260101-10, 250501-5, Fax : +91 1463 250601
E-mail : info@rkmarble.com, Website : www.rkmarble.com

अध्यक्ष की कलम से

साधर्मी बंधुओं,

सादर जय जिनेन्द्र।

कुछ दिन पूर्व जयपुर मुल्तानी मंदिर के दर्शन करने का एवं सन् 47 के बटवारे के समय मुल्तान-डेरा गाजी खान से, (अब पाकिस्तान का हिस्सा) से जिन प्रतिभा स्थलियों एवं जिनवाणी-ग्रंथों को कैसे जान की बाजी लगाकर, सुरक्षित लाने का इतिहास ज्ञात किया। सच, ऐसी बुजुर्ग पीढ़ी के प्रति बहुमान एवं गौरव से भर गया। श्री बलभद्र कुमार जी ने सारा वृत्तांत अन्य ट्रस्टियों की उपस्थिति में बयान किया, रोंगटे खड़े हो गये कि देव-शास्त्र की रक्षा हेतु कैसे सभी बंधु जान की बाजी पर खेलने को तैयार थे। मंदिर जी-आदर्श नगर, जयपुर जो मुल्तानी मंदिर के नाम से मशहूर है, की बेदी पर प्राचीन प्रतिमाओं के दर्शन कर-उस समय के सभी जैन बंधुओं को बारम्बार प्रणाम करने के भावों से द्रवित हो गया। जिनधर्म की रक्षा का यह अद्वितीय उदाहरण स्वर्णाक्षरों में अंकित है एवं हमेशा रहेगा।

श्री एवं श्रीमती रवीन्द्र जी बज, जयपुर की भावना के अनुरूप मैं उनके साथ सपत्नीक बसवा के कालेबाबा के दर्शन हेतु गांव बसवा, जिला- दौसा (राजस्थान) पहुंचा। श्री सुमत जी जैन जो बसवा के शेष बचे 5 मंदिरों के लिए वर्षों से तन-मन-धन से समर्पित है का सान्निध्य मिला। कसौटी पत्थर पर तराशी गई, अति अतिशयकारी भगवान पद्मप्रभ जी के दर्शन कर आवाक रह गया। जैसे किसी ने सम्मोहन कर दिया हो। हम सभी एकटक प्रभु के दर्शन-आरती में डूबते चले गये। तीर्थक्षेत्र कमेटी के सहयोग से हुए जीर्णोद्धार का अवलोकन भी कराया गया। कैसी बिडम्बना है कि कभी 750 परिवारों एवं 51 मंदिरों से सुसज्जित (जयपुर से पूर्व की राजधानी बसवा में) अब सिर्फ दो परिवार एवं 5 मंदिर ही शेष बचे हैं। ऊँची पहाड़ियों के बीच सघन वृक्षों से घिरी यह ऐतिहासिक जैन नगरी अपने गर्भ में

अनूठा इतिहास छुपाये हुए है। अष्ट धातु का पंच मेरु 75" एवं अष्टधातु का सहस्रकूट (61") तथा प्राचीन प्रतिमाएं - बसवा (राजधानी के रूप में) एवं जैनों के स्वर्णिम इतिहास की गवाह है।

ऐसे प्राचीन अतिशय क्षेत्रों की सुरक्षा कैसे होगी? यह प्रश्न पूरे भारतवर्ष के दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्रों की रक्षा-सुरक्षा एवं संरक्षण के लिए विद्यमान है जहाँ से जैन परिवारों का अन्यत्र पलायन हो चुका है। बिना समाज एवं धर्मप्रेमियों के कैसे मंदिरों, जिन-आयतनों एवं पुरातत्वों की सुरक्षा हो सकेगी? बिना पूजन के संस्कारों को पुनः जीवंत किए- कैसे होगी देव-शास्त्र-गुरु रक्षा-सुरक्षा?

धीरे-धीरे सुदूर ग्रामों से, जैन समाज बड़े-बड़े शहरों में आकर बसता जा रहा है। गांव के गांव खाली हो रहे हैं जिन मंदिरों में पूजन-प्रक्षाल की क्या कहें दर्शन करने वालों का अभाव होता जा रहा है। सूने पड़े भव्य जिन मंदिरों पर धीरे-धीरे दूसरों का कब्जा-अधिकार बढ़ता जा रहा है जो अपनी श्रद्धा के अनुसार प्रतिमाओं के स्वरूप को बदलने में कामयाब हो जाते हैं। इसी तरह हमारे कई प्राचीन तीर्थ-जिन मंदिर-जिन देव-दूसरे रूप में

आदर्श नगर, जयपुर जो मुल्तानी मंदिर के नाम से प्रसिद्ध है उसमें विराजमान प्राचीन प्रतिमाओं का दर्शन करते हुए राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सुधीर जैन एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती नीलम जैन।

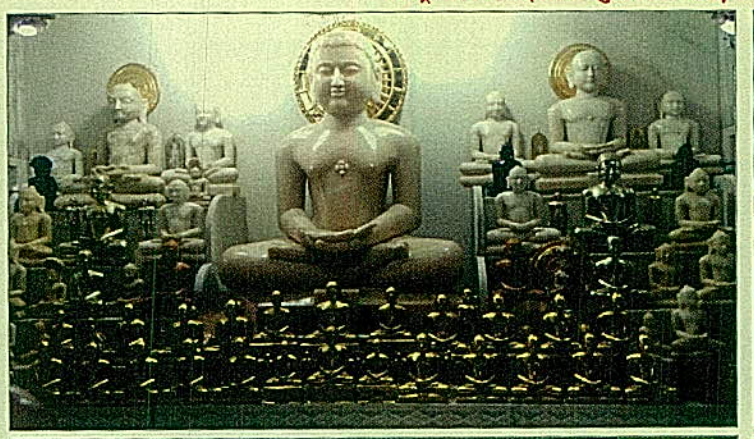

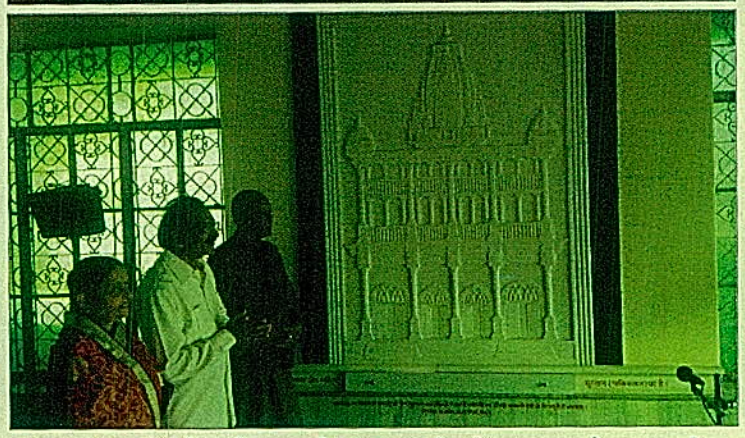

पूजे जाने लगे हैं और हमसे छिन गये हैं हमारा वैभवपूर्ण मंदिर और आयतन । ऐसे अनेकों परिवर्तित उदाहरण कश्मीर से कन्याकुमारी तक, कच्छ की खाड़ी से पूर्वांचल प्रदेश तक हमारे सामने है। आज हम चाहकर भी उन्हें वापस नहीं प्राप्त कर सकते।

क्या इसका कारण हमारे गुरुकुलों, शिक्षा संस्थानों से जैन धर्म के संस्कारों की कमी होना है या ऐसे धार्मिक संस्थानों का धीरे-धीरे बंद होना है।

हम कब तक बचाव की मुद्रा में निष्क्रिय बैठे रहेंगे। हम कब तक जीवंत जिन मंदिरों एवं मूर्तियों को - जन मानस की उपेक्षा का कवच पहना कर रखेंगे।

यदि हम सचमुच में अपने तीर्थों की रक्षा-सुरक्षा करना चाहते हैं तो हमें उन सभी स्थानों में जैन परिवारों को बसाना होगा। तीर्थयात्राओं के माध्यम से उन क्षेत्रों की साज-सम्हाल करनी ही होगी। जैन धर्म एवं सिद्धांतों के संस्कारों को देने वाले संस्थानों-जैसे प्रतिमा स्थलियां, गुरुकुल, धर्म की शिक्षा देने वाले वर्णी संस्थानों के प्रति तुरंत सजग एवं जागरुक होना पड़ेगा, ताकि आने वाले समय में संस्कारित बच्चे तीर्थों की सुरक्षा, धर्म आयतनों की रक्षा का दायित्व निभा सकें। वरना भविष्य में सिर्फ पुरातत्व की सामग्री ही बढ़ाते रह जायेंगे।

सुना है कि पाषाण भी बोलते हैं,
कभी वज्र के भी अधर डोलते हैं।
जड़े मंदिरों के वधिर देवता भी,
स्वयं द्वार की सांकलें खोलते हैं।।
जय जिनवाणी माँ

जय जिनेन्द्र।

सुधीर जैन

तीर्थ दो प्रकार के हैं - द्रव्य तीर्थ (सम्मेदशिखर, चम्पापुरी, पावापुरी आदि) और भावतीर्थ (सम्यग्ज्ञान, सम्यक तप, संयम आदि) (मूलाचार, गा. 560)

श्री एवं श्रीमती रवीन्द्र जैन 'बज' के साथ बसवा के कालेबाबा के दर्शन करते हुए राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सुधीर जैन एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती नीलम जैन।

णायं णरस्स सारो (दंसणपाहुड़, गा.31)। अर्थ- मनुष्य का सार ज्ञान है।

जैन तीर्थवंदना

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी एवं
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र ट्रस्ट का

मुखपत्र

वर्ष 5 अंक 6 दिसम्बर 2014

परामर्श मण्डल

डॉ. नीलम जैन, पुणे
श्री संजय जैन 'मैक्स', इंदौर
श्री श्रीकिशोर जैन, दिल्ली

संपादक

उमानाथ आर. दुबे
डॉ. सुरेन्द्र जैन 'भारती', बुरहानपुर (मानद्)

कार्यालय

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी
हीराबाग, सी.पी.टैंक, मुंबई 400 004.
फोन : 022-2387 8293 फैक्स: 022-23859370

e-mail : tirthvandana4@yahoo.com
e-mail : tirthvandana4@gmail.com
Website : www.digamberjainteerth.com

'भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी' को प्रेषित की जाने वाली राशि बैंक ऑफ बड़ौदा, वी.पी.रोड, मुंबई के सेविंग खाता नं.13100100008770 अथवा बैंक ऑफ इंडिया, सी.पी.टैंक, मुंबई के सेविंग खाता नंबर 001210100017881 में किसी भी शाखा में नि:शुल्क जमा कराकर उसकी सूचना मुंबई कार्यालय को देने की कृपा करें.

मूल्य

वार्षिक	:	300 रुपये
त्रिवार्षिक	:	800 रुपये
आजीवन (दस वर्ष)	:	2500 रुपये

विज्ञापन आमंत्रित हैं.

पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखको के अपने हैं. सम्पादक का इन विचारों से सहमत होना जरूरी नहीं है।

तीर्थक्षेत्रों को केन्द्र में रखकर करें यात्रा	7
जैनधर्म के 12वें तीर्थंकर श्री वासुपूज्य भगवान	9
परिग्रह से प्रभावना ?	11
जयपुर में श्री गिरनार तीर्थ राष्ट्र स्तरीय एक्शन कमेटी की मीटिंग सम्पन्न	13
तीर्थक्षेत्र कमेटी की पदाधिकारी परिषद की एवं ट्रस्ट मण्डल की बैठकें	16
करें राष्ट्र का पुनर्निर्माण : इंडिया हटाइए भारत लौटाइए	23
विनम्र अपील	22
कोल्हुआ पहाड़ पर भव्य जिन बिम्ब विराजमान	26
हमारे नये बने सदस्य	27

गिरनार-वंदन का प्रकाशन

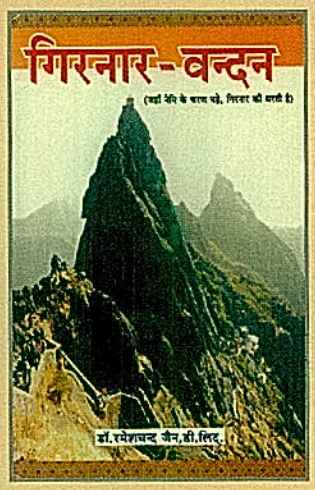

अनेकानेक कृतियों के सिद्धहस्त लेखक एवं ख्याति प्राप्त अनेकांत मनीषी डॉ. रमेशचन्द जैन, डी.लिट्. द्वारा लिखित 'गिरनार वंदन' कृति जैनधर्म के 22वें तीर्थंकर श्री नेमिनाथ भगवान के निर्वाण से सिद्धभूमि बनी गिरनार पर्वत की पाँचवीं टोंक, मुनिश्री प्रद्युम्नकुमार के निर्वाण से सिद्धभूमि बनी चौथी टोंक, मुनिश्री शम्भुकुमार के निर्वाण से सिद्धभूमि बनी तीसरी टोंक और मुनिश्री श्री अनिरुद्धकुमार के निर्वाण से सिद्धभूमि बनी दूसरी टोंक तथा राजकुमारी राजुल की तपोभूमि गिरनार के स्वरूप, इतिहास, विभिन्न ग्रन्थों में आये उल्लेख आदि को अभिव्यक्त करने वाली महत्वपूर्ण पठनीय शोध कृति है। भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी, मुंबई के द्वारा प्रकाशित यह कृति गिरनार की पावन भूमि को समर्पित एक महनीय अर्घ्य है।

यह ग्रन्थ भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी कार्यालय- हीराबाग, सी.पी.टैंक, मुंबई- 400 004 में उपलब्ध है। मूल्य : 120/- रुपये डाक खर्च अलग।

तीर्थक्षेत्रों को केन्द्र में रखकर करें यात्रा

कर्मयोगी डॉ. सुरेन्द्रकुमार जैन

सम्पूर्ण भारतवर्ष में जैनतीर्थ विद्यमान हैं जो सुख,शांति एवं समृद्धि का सन्देश देते हैं। धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष की प्राप्ति का सन्देश देते हैं। यहाँ व्याप्त शुभ परमाणु अंतःकरण की शुद्धि में सहायक होते हैं। तीर्थ शब्द ही पार उतारने का अर्थ देता है। जिन्हें संसार सागर को पार करना है वे तीर्थ की शरण में जाते हैं। तीर्थ शब्द का उच्चारण करते ही पवित्र भावों का संचार होता है। ऐसे क्षेत्र जो आत्महितकारी हैं, मंगलकारी हैं, विशुद्धि को ने वाले हैं, आध्यात्मिक शांति का संदेश देते हैं, पाप संहारक एवं पुण्योत्पादक माने जाते हैं, वैराग्य की वृद्धि में कारक होते हैं, कर्म कालिमा के प्रक्षालन में सहायक होते हैं, जहाँ से तीर्थंकरों और मुनियों ने सिद्धि प्राप्त की है, जहाँ पंचकल्याणक आदि अतिशय हुए हैं वे तीर्थक्षेत्र कहलाते हैं। इन तीर्थक्षेत्रों की वंदना करने पर, वहाँ जाकर भक्ति करने पर सहज ही शांति की प्राप्ति होती है अतः प्रयत्नपूर्वक शुभ परिणामों के साथ इन तीर्थों की वंदना करनी चाहिए।

तीर्थ क्षेत्रों की वंदना करने से हमें अपने पूर्वजों के द्वारा स्थापित विरासत को देखने का अवसर मिलेगा और उनके प्रति बहुमान भी प्रकट होगा तथा तीर्थंकरों, सिद्धों के प्रति निष्ठा मजबूत होगी। आचार्य श्री समन्तभद्र ने भगवान् महावीर के तीर्थ अद्वितीय कहा है क्योंकि इसमें कोई परिवर्तन नहीं होता। यह धर्म तीर्थ दया (अहिंसा), दम (संयम), त्याग (अपरिग्रह) और समाधि से युक्त है।

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज ने दि. 8 नवम्बर, 2014 को विदिशा (म.प्र.) में भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष श्री सिं. सुधीर जैन, महामन्त्री श्री पंकज जैन, संरक्षक श्री अशोक पाटनी, श्री प्रभात जैन, श्री खुशाल जैन, श्री संजय मैक्स, डॉ. सुरेन्द्रकुमार जैन 'भारती' (सम्पादक–तीर्थवंदना) तथा श्री अ.भा. दि.जैन विद्वत्परिषद् के अर्द्ध शतकाधिक विद्वानों की उपस्थिति में तत्त्व चर्चा गोष्ठी में धर्मतीर्थ की विस्तृत व्याख्या की और तीर्थ संरक्षण की प्रेरणा देते हुए कहा कि– हे भगवान् आपका यह तीर्थ अद्वितीय है। आगम तीर्थ है। जिनेन्द्र देव तीर्थ हैं। जिन गुरु तीर्थ हैं। आगमवेत्ता होना अनिवार्य है। जहाँ दया होती है वहाँ निष्ठा के साथ अपना पक्ष रखना चाहिए। स्वयं के प्रति दया और दूसरों के प्रति दया हितकारी है अतः ये दया जीवन में जरूरी है और इसकी प्रेरणा तीर्थों से प्राप्त होती है अतः तीर्थ संरक्षण एवं तीर्थवंदना करना चाहिए।

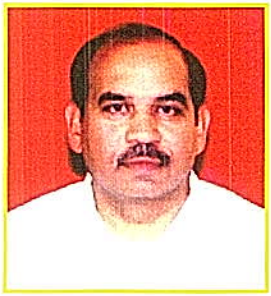

जैन तीर्थ क्षेत्रों के साथ हमारे महापुरुषों का इतिहास जुड़ा हुआ है जिसे जानकर हम अपना भविष्य तय कर सकते हैं। धार्मिकों के बिना धर्म नहीं होता और धर्म के बिना मनुष्य अधम कहलाता है। अतः धर्म का भी संरक्षण होना चाहिए, धर्म तीर्थ का भी संरक्षण होना चाहिए और धर्मात्माओं का भी संरक्षण होना चाहिए। ऐसा करने पर हम अपनी विरासत को सुरक्षित रख सकेंगे।

आज देश–विदेश में अनेक जैन संगठन कार्य कर रहे हैं। सबके अपने अपने लक्ष्य हैं।मुझे उनके कार्यों को देखकर प्रसन्नता भी होती है किन्तु यह देखकर दुःख भी होता है कि जब वे अपने कार्यक्रम आयोजित करने के लिए अपना स्थान छोड़कर कोई अन्य स्थान चुनते हैं तो वे कोई पर्यटक स्थल देखते हैं, कभी कभी तो ऐसा स्थान भी जहाँ जैन मन्दिर तक नहीं होते। ऐसे में संस्था प्रमुखों को चाहिए कि वे अपने बैठक, अधिवेशन, पार्टी आदि के लिए जैन तीर्थ क्षेत्रों का चयन करें ताकि आउटडोर पर्यटन के साथ जैन तीर्थों से भी उनका जुड़ाव हो सके। आज दिल्ली, मुम्बई तथा अन्य महानगरों में यह देखने में आ रहा है कि साधुओं के जन्मदिन, दीक्षा दिवस पिच्छि परिवर्तन आदि के समारोह विभिन्न सितारा होटलों, सिनेमाघरों, आडिटोरियम आदि में आयोजित किये जाते हैं। यह कहाँ तक उचित है ? इन्हीं स्थानों पर मांस, शराब आदि से युक्त पार्टियां/अधिवेशन आदि भी जैनेतर समाज द्वारा किये जाते हैं। ऐसे में इन स्थानों का चयन साधु–सन्तों से जुड़े कार्यक्रमों के लिए उचित कैसे कहा जा सकता है ?

आज धर्म संयम के साथ–साथ धन संयम की भी

यदि तुम सदा ही गौरवमय बनना चाहते हो तो सबके प्रति क्षमामय व्यवहार करो (तिरुवल्लूर)

गृहस्थों को आवश्यकता है। हमारा कमाया हुआ धन व्यर्थ के कार्यों या व्यर्थ के स्थानों पर घूमने में व्यय हो इससे अच्छा है कि हम जैनधर्म को जानने, जैनधर्म से जुड़ने तथा जैनतीर्थों की सुरक्षा में व्यय करें तो हमारे लिए श्रेयस्कर होगा। हमारे लिए प्रेरणा दी गयी है कि–

के कालः, कानि मित्राणि, को देवो को व्ययागमो।
कश्चाहं का च मम शक्ति, इति चिन्तय मुहुर्मुहु।।

अर्थात् काल कौन सा है? मेरे मित्र कौन लोग हैं? देश कौन–सा है? मेरी आय और व्यय क्या है? मैं स्वयं क्या हूँ और मेरी सामर्थ्य क्या है ? इस प्रकार बार–बार चिन्तन करो।

दान देकर मन विशेष हर्ष को प्राप्त होता है और इस जन्म तथा परलोक में विशेष सुख देने वाला होता है। आज यदि प्रत्येक जैन प्रतिदिन एक रुपया भी जैनतीर्थों के संरक्षण में व्यय करें तो एक भी प्राचीन तीर्थ उपेक्षित न रहे। तीर्थ यात्रा में भी जीवदया पालन का हमारा प्रयत्न होना चाहिए। पंडितप्रवर आशाधर जी ने अनगार धर्मामृत (4/6) में लिखा है कि–

यस्य जीवदया नास्ति तस्य सच्चरितं कुतः।
न हि भूतदुहां कापि क्रिया श्रेयस्करी भवेत्।।

अर्थात् जिसको जीव दया नहीं है उसके समीचीन चारित्र कैसे हो सकता है? क्योंकि जीवों को मारने वाले की देवपूजा, दान, स्वाध्याय आदि कोई भी क्रिया कल्याणकारी नहीं होती। हमें इस भाव का सदा स्मरण रखना चाहिए तथा हिसंक स्थानों पर कोई भी आयोजन नहीं करना चाहिए।

वर्तमान युग में पर्यटन अत्याधिक बढ़ रहा है और इसमें भी धार्मिक पर्यटन के लिए पारिवारिक स्वीकृति सहज प्राप्त हो जाती है अतः मेरा सभी पर्यटकों/यात्रियों से निवेदन है कि वे अपनी यात्रा का कार्यक्रम जैन तीर्थ क्षेत्रों को ध्यान में रखकर बनायें ताकि वे आत्म–आराधना भी कर सकें और पर्यटन का आनन्द भी ले सकें।

जिन तीरथ से सुख मिलता है, दर्शन–वंदन में आनंद।
भ्रमण सार्थक हो जाता है, कट जाता है भव का फंद।।

सभी तीर्थ हमें आत्मोन्नति की प्रेरणा देते हैं।

जैनधर्म के 12वें तीर्थंकर श्री वासुपूज्य भगवान्

कर्मयोगी डॉ. सुरेन्द्रकुमार जैन
महामन्त्री–श्री अ.भा.दि.जैन विद्वत्परिषद्
एल–65, न्यू इन्दिरानगर, बुरहानपुर (म.प्र.) मो. 09826565737

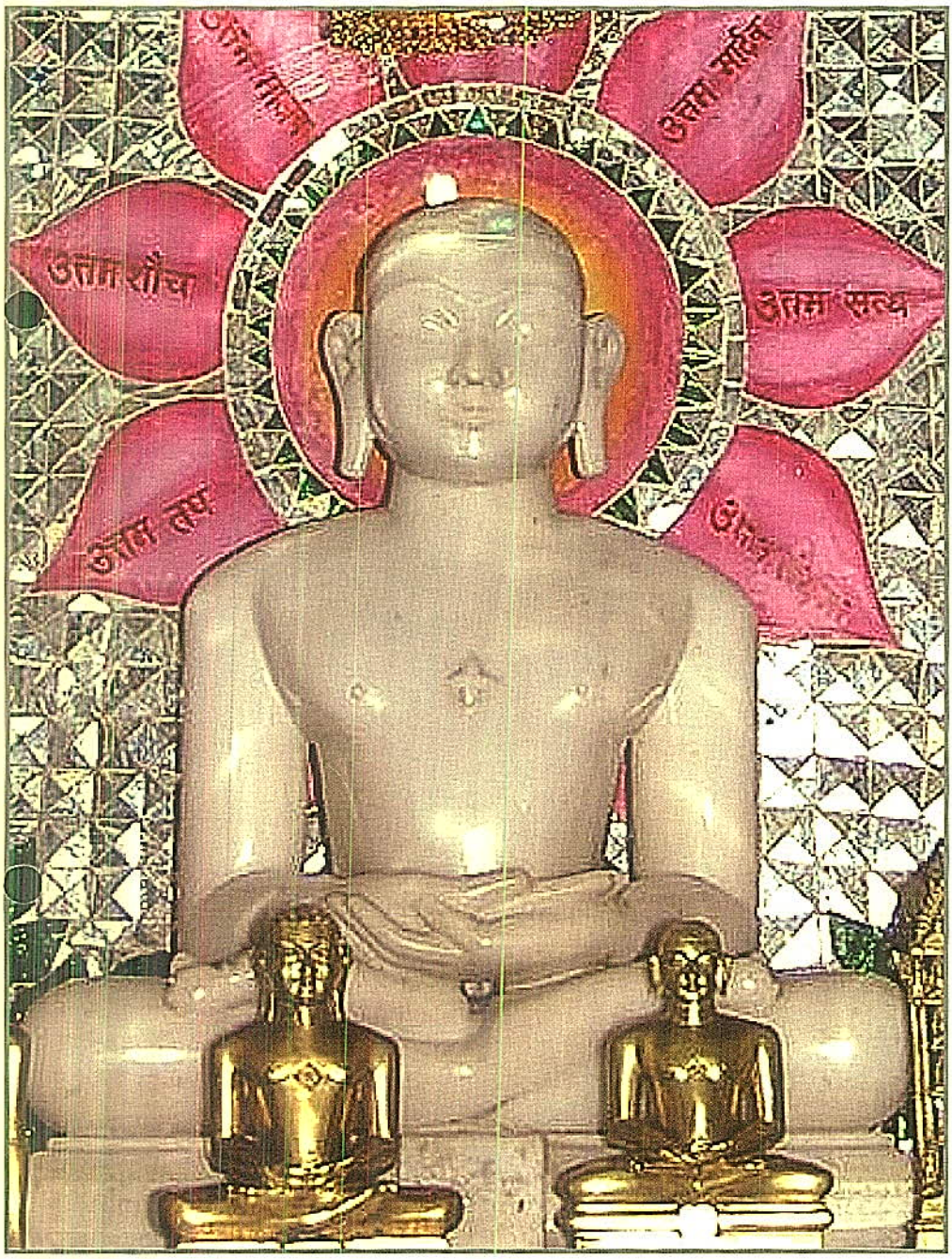

जैनधर्म के 12वें तीर्थंकर भगवान् श्री वासुपूज्य स्वामी हैं। उनके विषय में तिलोयपण्णत्ति (द्वितीय खण्ड), श्लोक–544 में लिखा है कि–

चम्पाए वासुपूज्जो, वसुपुज्ज णरेसरेण विजयाए।
फग्गुण–सुक्क–चउछसि–दिण्णम्मि जादो विसाहासु।।

अर्थात् श्री वासुपूज्य जी चम्पापुर में पिता श्री वसुपूज्य राजा एवं माता विजयारानी (जयावती) से फाल्गुन शुक्ल चतुर्दशी के दिन विशाखा नक्षत्र में उत्पन्न हुए।

उत्तरपुराण के अनुसार उनका जन्म फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी के दिन वारुण योग में हुआ था। उनके गर्भ में आगमन की तिथि आषाढ़ कृष्ण षष्ठी थी। उनका जन्म श्री श्रेयासंनाथ तीर्थंकर के तीर्थ से जब 54सागर प्रमाण अंतर बीत चुका था और अंतिम पल्य के तृतीय भाग में जब धर्म की सन्तति का विच्छेद हो गया था तब हुआ था। इनकी आयु भी इसी अंतर में सम्मिलित थी।

वे तीर्थंकर के रूप में जन्म से पूर्व महाशुक्र विमान में महाशुक्र नामक इन्द्र थे। उसकी पूर्व पर्याय में वे पुष्करार्द्ध द्वीप के पूर्व मेरु की ओर सीता नदी के दक्षिण तट पर वत्सकावती नामक देश में प्रसिद्ध रत्नपुर नगर में पुष्पोत्तर नामक राजा थे। उनके राज्य काल में सभी प्रजा प्रसन्न रहती थी क्योंकि राजा पुष्पोत्तर की प्रवृत्ति धर्ममय थी। उनके वचनों में शांति, चित्त में दया, शरीर में तेज, बुद्धि में नीति, दान में धर्म, शत्रुओं में प्रताप, जिनेन्द्र भगवान् में भक्ति, न्याय के मार्ग में चलने की प्रवृत्ति और गुणों से प्रेम था। एक समय वैराग्य के उत्पन्न होने पर उन्होंने अपने पुत्र धनमित्र के लिए राज्य सौंपकर जिन दीक्षा का वरण किया और सोलहकारण भावनाओं का चिन्तन कर सल्लेखना पूर्वक मरण किया था।

आत्मज्ञान रूप पवित्र तीर्थ है (पद्मनन्दि-पंचविंशतिका, चंद्रोदय अ 28)

तीर्थंकर वासुपूज्य का कुमारकाल 18 लाख वर्ष, आयु–72 लाख वर्ष, शरीर की ऊँचाई 70 धनुष, रंग–अरुण (लाल, कुंकुम के समान), चिन्ह महिष (भैंसा) था। उन्होंने मन्दारगिरि (चम्पापुर) से निर्वाण प्राप्त किया। उन्होंने विवाह नहीं किया था। इस तरह वे 11 तीर्थंकरों के बाद पहले ऐसे तीर्थंकर थे जो बालयति थे।

उन्होंने स्वयं ही संसार की असार दशा को देखा और अपने वैराग्यमय चिन्तन से जिनदीक्षा का विचार किया। उनके वैराग्य को जानकर लौकान्तिक देवों ने आकर उनकी अनुमोदना एवं स्तुति की। देवों ने आकर उन्हें पालकी पर विराजमान किया और मनोहरोद्यान में ले गये। वहाँ उन्होंने दो दिन के उपवास का नियम लेकर फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी के दिन सायंकाल विशाखा नक्षत्र में सामायिक नाम का चारित्र ग्रहण किया। दिगम्बर जिनदीक्षा ग्रहण करते ही उन्हें मनःपर्यय ज्ञान हो गया। उनके साथ 676 राजाओं ने मुनिदीक्षा ग्रहण की। दूसरे दिन उन्होंने आहार के लिए महानगर में प्रवेश किया जहाँ उन्हें सुन्दर नामक राजा ने आहार प्रदान किया। आहार के साथ ही पंचाश्चर्य हुए। छद्मस्थ अवस्था का एक वर्ष व्यतीत होने पर मनोहरोद्यान नामक वन में कदम्ब वृक्ष के नीचे माघ शुक्ल द्वितीय के दिन सायंकाल विशाखा नक्षत्र में चार घातियां कर्मों का नाश कर उन्होंने केवलज्ञान प्राप्त किया।

सौधर्म इन्द्र की आज्ञा से कुबेर से समोशरण की रचना की। उनके धर्म आदि 66 गणधर थे। वे 12सौ पूर्वधारियों, 39हजार शिक्षकों, 5400 अवधिज्ञानियों, 6हजार केवलज्ञानियों, 10 हजार विक्रियाऋद्धि धारकों, 6 हजार मनःपर्ययज्ञानियों और 4200 वादियों से युक्त अर्थात् कुल 72हजार मुनियों से सुशोभित थे। उनकी 1लाख 6हजार आर्यिकाएं थीं। जिनमें सेना आर्यिका प्रमुख थी। 2लाख श्रावक, 4श्राविकाएं, असंख्यात देव–देवियां, संख्यात तिर्यंच उनके समोशरण में बैठकर धर्म श्रवण करते थे। भगवान् की दिव्यवाणी से उन्होंने अपने जीवन को कृतार्थ किया था।

सम्पूर्ण आर्य क्षेत्र में अपने श्री विहार से उपकृत करते हुए तीर्थंकर श्री वासुपूज्य चम्पानगरी में आए। वे चम्पानगरी में क्रम–क्रम से 1हजार वर्ष तक रहे। जब 1माह आयु शेष बची तब योग निरोध कर रजतमालिका नामक नदी के किनारे की भूमि पर विद्यमान मन्दारगिरि की शिखर को सुशोभित करने वाले मनोहरोद्यान में पर्यंकासन से स्थित हुए और भाद्रपद शुक्ल चतुर्दशी के दिन सायं काल विशाखा नक्षत्र में 94 मुनियों के साथ उन्होंने निर्वाण (मोक्ष) प्राप्त किया।

आचार्य श्री समन्तभद्र ने 'स्वयम्भू स्तोत्र' में तीर्थंकर श्री वासुपूज्य की स्तुति करते हुए लिखा है कि–

शिवासु पूज्योभ्युदय क्रियासु त्वं वासुपूज्यस्त्रिदशेन्द्र पूज्यः।
मयापि पूज्योऽल्पधिया मुनीन्द्र, दीपार्चिषा किं तपनो न पूज्यः।।1।।

अर्थात् हे मुनीन्द्र! आप वासुपूज्य हैं, मंगलमयी अभ्युदय क्रियाओं में देवराज के द्वारा पूजनीय हैं। वासुपूज्य नाम को धारण करने वाले आप इन्द्र तथा चक्रवर्ती आदि के द्वारा पूज्य है। इसलिये अल्पबुद्धि (मुझ समन्तभद्र) के द्वारा भी पूजनीय हैं। क्या दीपशिखा के द्वारा सूर्य पूजनीय नहीं होता ? आगे वे लिखते है कि–

न पूजयार्थस्त्वयि वीतरागे, न निन्दया नाथ! विवान्तवैरे।
तथापि ते पुण्यगुणस्मृतिर्नः, पुनातु चित्तं दुरितांजनेभ्यः।।2।।

अर्थात् हे स्वामी! यद्यपि राग से रहित आपमें पूजा के द्वारा प्रयोजन नहीं है और वैर से रहित आपमें निन्दा के द्वारा मतलब नहीं है तो भी आपके प्रशस्त गुणों का स्मरण हमारे मन को पाप रूपी अंजन से पवित्र करे।

तीर्थंकर श्री वासुपूज्य भगवान् पदार्थ के सप्तभंगी रूप का निरूपण करने वाले थे। उनके अनुसार–

1. पदार्थ कथंचित् सत् है
2. पदार्थ कथंचित् असत् है।
3. पदार्थ कथंचित् सत्–असत् उभय रूप है।
4. पदार्थ कथंचित् अवक्तव्य है।
5. पदार्थ कथंचित् सत् अवक्तव्य है।
6. पदार्थ कथंचित् असत् अवक्तव्य है।
7. पदार्थ कथंचित सदसद् वक्तव्य है।

इस प्रकार का कथन करने से वे सत्यवादी के रूप में प्रसिद्ध हुए। वे दया धर्म के अनुपालक, अपरिग्रह व्रत के धारक होने के कारण जगत्पूज्य हुए। हम सबको उनके गुणों की आराधना करते हुए उनके निर्वाण स्थल चम्पापुर तीर्थ की वंदना अवश्य करना चाहिए।

धर्म किसी दुकान पर नहीं मिलता जो पैसे से खरीदा जाये।

परिग्रह से प्रभावना ?

- अजित जैन 'जलज' अध्यापक

सुनो! व्रती सामयिक करेगा, जब करता आरंभ नहीं,
पास परिग्रह नहिं रखता है, पर का कुछ आलंब नहीं।
तभी गृही वह यतिपन को है, पाता दिखता है ऐसा,
हुआ कहीं उपसर्ग वस्त्र से, वेष्टित मुनि लगता जैसा।।

समंतभद्र स्वामी के श्रावकाचार में ये विचार अगर गृही ने मन से माने होते तथा यति ने फैलाये होते तो हमारा भारत वर्ष जैन धर्म एवं धार्मिकता से इतना सिमटा नहीं होता। वैदिक धर्म को तो हिंसक कर्मकाण्डों से हमने बचा लिया, परन्तु हम स्वयं कर्मकाण्डों में उलझ कर रह गये। इस्लाम के उसूलों को ना ुझ कर मुसलमान शासकों ने सैकड़ों वर्ष धार्मिक उन्माद में गुजारे तो ईसायत को भुलाकर लोभी अंग्रेजों ने कपटपूर्वक सारे संसार का शोषण किया। ऐसे घनघोर अंधकार में भी महावीर की अहिंसा के द्वारा आजादी का विश्वविजयी अभियान आरंभ करने वाले महात्मा गांधी की शक्ति का स्रोत - 'अपरिग्रह'- ही था।

आतंकी कसाब गरीबी के कारण जेहादी बना। सारे संसार में शोषण के शिकार लोग आसानी से आतंक के अगुवा बन जाते हैं। अर्थ से धर्म नहीं होता है, बल्कि धर्म पूर्वक अर्थ उपार्जन से ही अर्थ सार्थक होता है। आज जैन-समाज धन सम्पदा के बल पर पूजा-प्रतिष्ठा का जयघोष कर रहा है। क्या इससे धर्म की सच्ची प्रभावना हो रही है? क्या इससे समाज, धर्म, देश और विश्व को सकारात्मक संदेश जा रहे हैं?

धर्म का शिखर : अपरिग्रह

जैन गीता-समण सुत्तं के अनुसार -

'संग निमित्तं मारइ, भणइ अलीअं करेइ चोरिक्कं।
सेवइ मेहुण मुच्छं, अप्परिमाणं कुणइ जीवो ।।

जीव परिग्रह के निमित्त हिंसा करता है, असत्य बोलता है, चोरी करता है, मैथुन का सेवन करता है और अत्यधिक मूर्च्छा करता है।'

'सव्व ग्रंथ विमुक्को, सीईभूओ पसंद चित्तो अ।
जं पावइ मुत्तिसुहं, न चक्कवट्टी वि तं लहइ ।।

सम्पूर्ण ग्रंथ (परिग्रह) से मुक्त शीतीभूत प्रसन्न चित्त श्रमण जैसा, मुक्तिसुख पाता है वैसा सुख चक्रवर्ती को नहीं मिलता।'

आचार्य कुन्दकुन्द कहते हैं -

'णग्गो पावइ दुक्खं, णग्गो संसार सायरे भमई ।।
णग्गो ण लहइ बोहि जिण भावण वज्जिओ सुइरं ।।
जो मात्र नग्न बन जीवन है बिताता,
संसार में भटकता भव दुःख पाता।
पाता न बोधि वह केवल नग्न साधू,
वो साम्य का यदि बना न कदापि स्वादू ।।

मात्र बाह्य परिग्रह त्याग से कुछ भी होने वाला नहीं है इसका तात्पर्य यह कदापि नहीं है कि सच्चे साधक अब नहीं हैं।

'भरहे दुस्समकाले धम्मज्झाणं हवेइ साहुस्स।
तं अप्प सहावठिदे ण हु मण्णइ सोवि अण्णाणी।

लो धर्म ध्यानरत भारत देश में भी, साधु मिले दुखद पंचम काल में ऐसे निजात्मरत साधक साधु जिन्हें न माने, वे अज्ञ मूढ कहला सुनो सयाने।

आचार्य अमृतचन्द्र कहते हैं :-

अर्था नाम यदेते प्राणाः बहिश्चरा पुंसाम।
हरति स तस्य प्राणान यो यस्य जनो हरत्यर्थान ।।

जितने भी धन धान्य आदि पदार्थ हैं वे पुरुषों के बाह्य प्राण हैं जो पुरुष इनका नाश (हरण) करता है, वह उसके प्राणों का नाश (हरण)करता है।

पंडित पदमचन्द्र शास्त्री ने जैन ग्रंथों का गंभीर अध्ययन कर 'मूल जैन संस्कृति-अपरिग्रह' का लेखन किया। उनके अनुसार-

'जैन- न्याय अन्याय जिस किसी भी भाँति हो, परिग्रह की बढ़वारी में जुट पड़े हैं और उनका ध्यान लाखों कमाकर हजारों मात्र दान देने की ओर केन्द्रित होता जा रहा है।' तथा

'आत्मा का कथा करने वाले बड़े-बड़े वाचक भी परिग्रह संचयन में लगे रहे और वे भी अहिंसा दान आदि के विविध आयामों से विविध रूपों में परिग्रह संचयन और मान पोषण आदि में लीन रहे, जिससे वीतरागता का प्रतीक अपरिग्रहत्व-जैनत्व लुप्त होता रहा। हमारी दृष्टि में अपरिग्रहवाद को अपनाने के सिवाय जैनधर्म के संरक्षण का अन्य उपाय नहीं।'

इसी प्रकार महाकवि वीरेन्द्र कुमार जैन भी 'अनुत्तर योगी तीर्थंकर महावीर' में कहते हैं- 'अतुल धनशाली श्रावक श्रेष्ठि, सारे संसार के रत्न सुवर्ण से अपने कोषागार न भरते तो, अरिहंतों का जिनशासन चिर काल जीवंत रह सकता।'

प्रासंगिक-परिग्रही प्रभावना एवं सच्ची प्रभावना

आज धर्म प्रभावना के कार्यक्रमों की धूम है। गांव से लेकर महानगर तक साल भर विधि-विधान, भजन कीर्तन के डी.जे. जैन धर्म की जय-जयकार कर रहे हैं। ऐसी जैन बस्ती दुर्लभ है जहां किसी वर्ष कोई इन्द्र नहीं बने, अगर सारी इन्द्रियाँ भोगों के लिये अशक्त हो गयी तो भगवान के माता-पिता बनने का

सौभाग्य कौन श्रावक श्रेष्ठि छोड़ना चाहेगा?

तीन लोक के नाथ के सामने, श्राविकाओं के मनोहर नृत्य फिल्मी धुनों पर न हो तो धर्मप्रेमी श्रावकों को मजा नहीं आता। फिर बोलियों की खींचातानी और जानवरों की रस्साकशी पर बोलना भी खतरे से खाली नहीं है।

क्षु. मनोहर जी वर्णी लिखते हैं-

'प्रभावना का लक्षण समंतभद्राचार्य कह रहे हैं। अज्ञानरूपी अंधकार के फैलाव को हटाकर यथायोग्य रीति से जैन शासन के महात्म्य का प्रकाश करना, प्रभावना कहलाता है। खाली धन वैभव, रथ, सोना-चांदी, बड़े-बड़े ध्वजा पताका फहराना, बड़े-बड़े जुलूस निकालना, इसमें प्रभावना नहीं कहलाती, जिससे लोगों को यह परिचय हो कि अपनी आत्मा का कल्याण तो जिनेन्द्र देव ने बताया। जनसमूह सराह उठे कि धन्य है यह जैन शासन जिसमें संसार के संकटों से छूटने का उपाय बताया है, यह बात दूसरों के चित्त में आ सके, तब तो आपने प्रभावना की, नहीं तो प्रभावना तो दूर रही, उल्टी विपत्ति ही मोल ली।

इसी प्रकार पं. सदासुखदास कासलीवाल कहते हैं- 'अहो जैनीन के बड़ा अहिंसा व्रत जो प्राण जाते हू अपने संकल्पतैं जीव हिंसा नाहीं करै हैं तथा जिनके असत्य का त्याग तथा चोरी का त्याग, परस्त्री का त्याग परिग्रह का परिमाण करि, समस्त अनीति तै पराङ्मुख है, वैर रहित हुआ समस्त जीवनि में जिनके मैत्रीभाव है।' ऐसा आश्चर्यजनक रूप धर्म इनतैं ही बनै, ऐसी प्रशंसा जिनके निमित्त तैं मिथ्याधर्मीनि में हू प्रकट होय है तिनकरि प्रभावना होय है।'

परिग्रही प्रभावना का प्रभाव

आज समाज में सर्वाधिक सम्मानित परिग्रही-प्रभावना के पंच ही हैं। मंदिर में धर्म के स्थान पर अर्थ की चर्चा तथा अर्चा होने लगी है। जो धर्म कर्म में खर्च कर सकते हैं अथवा करवा सकते हैं, आज उन्हीं की तूती बोलती है।

बड़ा सीधा सादा रास्ता है- आप चाहे जो करें अगर आप 10-15 वर्षों में किसी भी प्रकार से अच्छी खासी पूंजी बना लेते हैं तो फिर मात्र इसके टैक्स से ही आप के सारे पाप धुलवा दिये जायेंगे? इच्छाओं को रोकने और इन्द्रियों को जीतने की जरूरत क्या है जब स्वर्ग के टिकट बोलियों से मिल जाते हैं??

परिग्रह पाप है, अति परिग्रही नियम से नरक जाता है ... यह आप मत सुनें। भगवान की प्रतिष्ठा करके ही जब आपको मुक्ति मिल जाने वाली है तो फिर जिनवाणी पढ़ने में माथापच्ची क्यों की जाये? अगर कहीं भूल कर भगवान की बातों पर अध्ययन, मनन, चिंतन शुरू कर दिया गया तो संभव है कोई ना कोई पंच आपसे यह कह दे कि 'जिनवाणी की अविनय कर नरक में क्यों जाते हो?

बहुत कठिन काल है। सुन्दर पैकिंग में सजा धर्म का माल मात्र डिब्बा भर है। विज्ञापनों में मत-उलझिये ... भगवान से सीधे बातें करिये ... उनकी बतायी बातें पढ़िये एवं गुनिये। लोभ पाप का बाप है, परिग्रह अधर्म का मूल है, क्या हम ऐसा कह भी नहीं सकते।

परिग्रह को महिमामंडित करने से जैन धर्म का पराभव हो रहा है। अपरिग्रह का चरम स्वरूप ... जैनधर्म है। परिग्रहों को छोड़ने से अनंत सुख प्राप्त करने वाले अरिहंत सिद्धों की हम आराधना करते हैं, परिग्रह से विरत साधुओं का हम सान्निध्य पाते हैं, फिर भी हम लगातार परिग्रह की ही परिक्रमा क्यों लगाते जा रहे हैं?

गरीबी की गरिमा और सादगी का सौंदर्य कहाँ है, एक सीधे सच्चे श्रावक को सम्मान मिलना तो दूर रहा आज एक निस्पृही श्रमण को आगमानुकूल चर्या चलाना भी दूभर हो रहा है।

भ्रष्टाचार, मिलावट, भ्रूणहत्या, दहेज प्रथा इत्यादि सभी समस्याओं के मूल में परिग्रह-प्रतिष्ठा ही है। जो भी लोग प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से इस प्रवृत्ति को पल्लवित कर रहे है, वह पाप का ही पोषण कर रहे हैं।

कुछ लोग बड़ी मासूमियत से कह देते हैं कि हम परिग्रह का नहीं बल्कि उसके त्याग का सम्मान कर रहे हैं। .... मेरे भोले भाई, तर्कों वितर्कों से कुछ हासिल होने वाला नहीं है। जरा ध्यान से देखो, यह तथाकथित त्याग समाज को किस कदर खोखला कर रहा है।

अपरिग्रह का आनंद

'धन सम्पत्ति के बल पर सब कुछ पाया जा सकता है- इस सर्वव्यापी सोच के विपरीत धर्मपूर्वक अर्थ का उपार्जन करते हुये, संतोषवृत्ति से परिग्रह क्रमशः परिमित करते जाना ही जैनत्व है। और ऐसा करते हुये व्यक्ति के आनंद में उत्तरोत्तर वृद्धि ही होती है। अपने आराध्य-सुख के सागर'-परमात्मा-अपरिग्रह के परिपूर्ण पालन के प्रतिफल ही हैं।

परिग्रह अगर पाप का मूल है तो परिग्रह का न्यूनीकरण स्वतंत्रता, स्वावलम्बन, स्वाभिमान एवं सच्चे सुख का स्रोत है। अपरिग्रह का अंगीकारण व्यष्टि से लेकर समष्टि तक समग्र क्रांति करने में सक्षम है।

जैन धर्म एवं कर्मसिद्धांत में आस्था अर्थात सम्यक्दर्शन हेतु अपरिग्रह का पाठ हमें अवश्य सीखना होगा। लोभ के कारण क्रोध, मान एवं माया उपजते हैं तो परिग्रह के कारण हिंसा, चोरी एवं कुशील पनपते हैं। अपरिग्रह अहिंसा से भी व्यापक है, वस्तुतः आचार में अहिंसा तथा विचार में अनेकांत हेतु व्यवहार में अपरिग्रह अत्यावश्यक है जिससे कि ब्रह्म जैसी चर्या सहज संभव है।

मनुष्य ने जो वस्तु छोड़ दी है, उससे पैदा होने वाले दुःख से उसने अपने को मुक्त कर लिया है (तिरुवल्लूर)

जयपुर में श्री गिरनार तीर्थ राष्ट्र स्तरीय एक्शन कमेटी की मीटिंग सम्पन्न

जयपुर रविवार 16 नवम्बर, 2014. श्री गिरनारजी तीर्थ राष्ट्र स्तरीय एक्शन कमेटी की मीटिंग भट्टारक जी की नसिया में भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सुधीर जी जैन की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई, जिसमें एक्शन कमेटी के संयोजक एवं बंडीलाल दिगम्बर जैन कारखाना के अध्यक्ष श्री निर्मल कुमार बंडी, उपमंत्री श्री पवन बागड़िया, तीर्थक्षेत्र कमेटी के उपाध्यक्ष श्री वसंतलाल एम. दोशी, महामंत्री श्री पंकज जैन (चेयरमैन-पारस चैनल, दिल्ली), परम संरक्षक श्री एन.के.सेठी, श्री अशोक पाटनी (चेयरमैन-आर.के.मार्बल), निर्मल ध्यान केन्द्र गिरनारजी के अध्यक्ष श्री सौभागमल कटारिया, ट्रस्टी श्री ज्ञानचन्द बड़जात्या (मुंबई), दिगम्बर जैन महापरिषद दिल्ली के अध्यक्ष साहू श्री अखिलेश जैन, श्री स्वदेशभूषण जैन, तीर्थक्षेत्र कमेटी के मंत्री श्री संतोष जैन पेंढारी, कोषाध्यक्ष श्री शिखरचन्द पहाड़िया, डॉ. अक्षयकुमार जैन (ग्वालियर), श्री सुनील जैन 'शिवम्' (दिल्ली), श्री पूनमचन्द शाह एडवोकेट (जयपुर), श्री अभिनव जैन एडवोकेट (दिल्ली), श्री गौतमभाई शाह - भाजपा नेता (अहमदाबाद), गुजरात अंचल के अध्यक्ष श्री अजितभाई मेहता (अहमदाबाद), श्री महेशभाई शाह (वड़ोदरा) राजस्थान अंचल के अध्यक्ष श्री राजेन्द्र जैन गोधा, परम संरक्षक श्री गणेश राणा, श्री विवेक काला, महामंत्री श्री कमल बाबू जैन एवं संयुक्त मंत्री श्री राजेन्द्र बिलाला एवं श्री रवीन्द्र जैन 'बज' सहित अनेकों महानुभाव उपस्थित रहे। सभा में राजस्थान अंचल की ओर से उपस्थित सभी महानुभावों का स्वागत /अभिनंदन किया गया।

परोपकारी के हाथ का धन उस वृक्ष के समान है जो औषधियों का सामान देता है और सदा हरा बना रहता है (तिरुवल्लूर)

गिरनार एक्शन कमेटी की सभा में कमेटी कमेटी के प्रमुख संयोजक
श्री निर्मलजी वण्डी गिरनार समस्या व समाधान पर विस्तार से अपने विचार प्रस्तुत करते हुए

गिरनार एक्शन कमेटी की सभा में पिछली सभा की मिनिट्स का वाचन
करते हुए महामंत्री श्री पवनजी जैन

भारतवर्षीय तीर्थ क्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सुधीरजी जैन का
स्वागत करते हुए श्री विवेक जी काला

गिरनार एक्शन कमेटी के संयोजक श्री निर्मलजी वंडी का
स्वागत करते हुए श्री अशोकजी पाटनी आर.के. मार्बल्स

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय महामंत्री श्री पंकज जैन का स्वागत करते
हुए राजस्थान अंचल के परम संरक्षक श्री गणेशजी राणा

तीर्थ क्षेत्र कमेटी राजस्थान अंचल के अध्यक्ष श्री राजेन्द्र के. गोधा
राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सुधीरजी जैन का अभिवादन करते हुए

किं न स्यात्साधुसंगमात् (उत्तरपुराण, 62, 350)। अर्थ साधु के समागम से क्या नहीं होता है। अर्थात सभी कार्य व मनोरम सफल हो जाते हैं।

गिरनार एक्शन कमेटी की सभा में श्रीमान् संतोष पेंढारी का स्वागत करते हुए राजस्थान अंचल के अध्यक्ष श्री राजेन्द्र के. गोधा

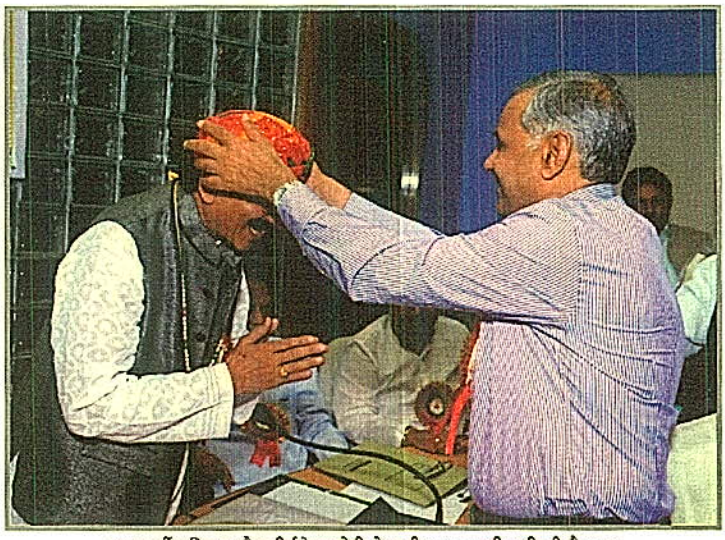

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सुधीरजी जैन का स्वागत पगड़ी पहनाते हुए श्री अशोकजी पाटनी आर.के. मार्बल्स

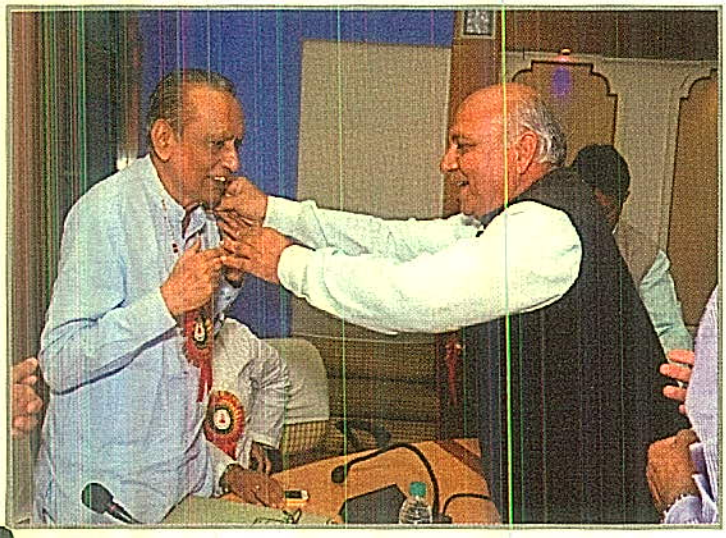

तीर्थक्षेत्र कमेटी राजस्थान अंचल के महामंत्री श्री कमलबाबू जैन श्री वसन्तभाई का स्वागत करते हुए

तीर्थक्षेत्र कमेटी राजस्थान अंचल के अध्यक्ष श्री राजेन्द्र के.गोधा का स्वागत

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सुधीर जी जैन एवं गिरनार एक्शन कमेटी के संयोजक श्री निर्मलजी बंडी के बैज लगाते हुए राजस्थान अंचल के महामंत्री श्री कमल बाबू जैन

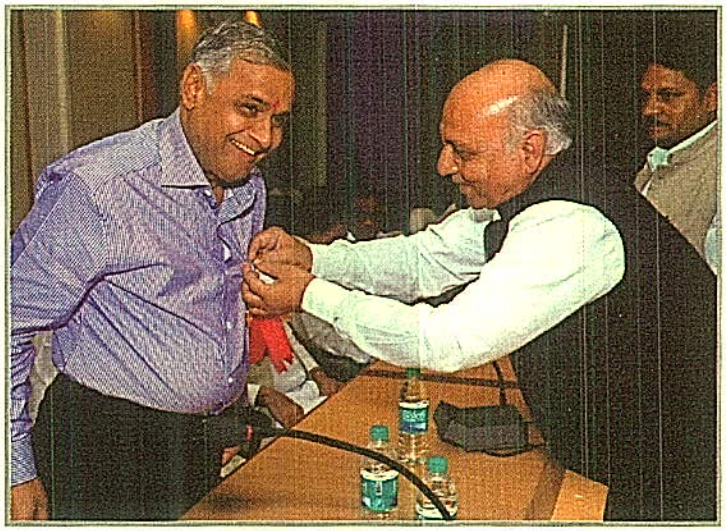

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय परम संरक्षक श्री अशोक जी पाटनी आर.के. मार्बल्स के बैज लगाते हुए राजस्थान अंचल के महामंत्री श्री कमल बाबू जैन

किं न स्यात्साधुसंगमात् (उत्तरपुराण, 62, 350) अर्थ साधु के समागम से क्या नहीं होता है। अर्थात सभी कार्य व मनोरम सफल हो जाते हैं।

तीर्थक्षेत्र कमेटी की पदाधिकारी परिषद की एवं ट्रस्ट मण्डल की बैठकें 29 नवम्बर, 2014 को मुंबई में सम्पन्न

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की पदाधिकारी परिषद एवं ट्रस्ट मण्डल की मीटिंगें श्री प्रभातचन्द्र जी जैन के कार्यालय-प्रशस्ति डेवलपर्स प्रा.लि., 303/ए., स्काई लाइन, आयकोन, मित्तल इंडस्ट्रियल इस्टेट के पास, मरोल नाका, अंधेरी (पूर्व) मुंबई- 400 059 में शनिवार दिनांक 29 नवम्बर, 2014 को सम्पन्न हुई। तीर्थक्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष श्री सुधीर जी जैन मीटिंग के लिए जैसे ही मुंबई पहुंचे उन्हें सूचना मिली कि उनका भतीजा श्री सलिल जैन जो 45 वर्ष का था उसका हृदय गति रुक जाने से आकस्मिक दुःखद निधन हो गया । अतएव वे आनन-फानन में वापस कटनी लौट गये।

उक्त बैठकों का संचालन तीर्थक्षेत्र कमेटी की वरिष्ठ उपाध्यक्षा श्रीमती सरिता जैन ने किया। बैठक में 15 नये बने आजीवन सदस्यों के आवेदन पत्रों को स्वीकृत किया गया। महाराष्ट्र अंचलीय समिति की अनुशंसानुसार श्री नंदीश्वर दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र पंचालेश्वर, जिला- बीड़ (महाराष्ट्र) को अतिशय क्षेत्र श्रेणी के अंतर्गत सम्बद्ध किया गया। आगामी 5 वर्षों के लिए गठित निम्नलिखित अंचलीय समिति में चुने गये सदस्यों की सूची प्रस्तुत की गई जिसकी संपुष्टि की गई। महाराष्ट्र अंचल में 94 सदस्य, मध्यांचल में 53 सदस्य, कर्नाटक में 30 सदस्य, राजस्थान में 38 सदस्य एवं गुजरात में 7 सदस्य। बैठक में 31 मार्च, 2014 को पूर्ण हुए वर्ष का आडिटेड हिसाब सर्वानुमति से स्वीकृत किया गया। श्री गिरनारजी केस, श्री ऋषभदेव (केशरियाजी केस) एवं श्री अंतरिक्ष पार्श्वनाथ क्षेत्र सिरपुर के बारे में विभिन्न न्यायालयों में चल रहे कोर्ट केसेस की समीक्षा की गई। सभी ने श्री अंतरिक्ष पार्श्वनाथ भगवान की मूर्ति जो वर्षों से ताले में बंद है उसका ताला कैसे खुलवाया जाय उस पर विचार विमर्श किया गया। तीर्थराज श्री सम्मेदशिखर पहाड़ पर चल रहे जीर्णोद्धार एवं विकास कार्यों की रिपोर्ट प्रस्तुत की गई जो सर्व सम्मति से स्वीकार की गई। बैठक में देश की बड़ी-बडी कंपनियों द्वारा खाद्य उत्पादनों पर पशुओं के अवयव पाने जाने तथा पशुओं की निर्मम हत्या कर, मांस का निर्यात करने आदि ज्वलंत समस्या पर चर्चा विचारणा के पश्चात यह निर्णय लिया गया कि इन कंपनियों के खिलाफ मुंबई हाई कोर्ट में जो PIL2428 लंबित है उसमें तीर्थक्षेत्र कमेटी भी सहयाचिकाकर्ता के रूप में सम्मिलित होकर उसका विरोध करे। यह भी जानकारी दी गई कि देश में पशुओं की हो रही निर्मम हत्याएं एवं खोले जा रहे नये-नये कत्लखानों और उसमें किये जा रहे गायों के कत्ल के विरोध में दिल्ली में राष्ट्रीय स्तर पर अहिंसा रैली का आयोजन दिनांक 30 जनवरी, 2015 को राजघाट पर किया गया है जिसमें अधिकाधिक संख्या में उपस्थित रहने की अपील की गई।

सभा में **तीर्थक्षेत्र कमेटी के पूर्व महामंत्री, उपाध्यक्ष एवं वर्तमान में तीर्थक्षेत्र ट्रस्ट के ट्रस्टी श्री अरविन्द रावजी दोशी** के 75 वर्ष के यशस्वी जीवन के निमित्त अमृत महोत्सव पर श्रीमती सरिता जैन एवं सभा में उपस्थित सभी महानुभावों ने उन्हें शॉल-श्रीफल भेंट कर अभिनंदन किया। श्री अरविन्द वालचन्द ग्रुप ऑफ इंडस्ट्रीज के धर्मनिष्ठ प्रतिनिधि हैं और तीर्थ सुरक्षा के प्रयत्नों में अच्छे मार्गदर्शक हैं। भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के तत्वावधान में तीर्थक्षेत्रों के सर्वेक्षण का शुभारम्भ उनके ही नेतृत्व में सम्पन्न हुआ था। सन् 1982 से 1992 तक उन्होंने तीर्थक्षेत्र कमेटी के उपाध्यक्ष के रूप में पश्चात 1992 से 2008 तक महामंत्री के रूप में अपनी सेवाएं दी हैं। वर्तमान में आप तीर्थक्षेत्र ट्रस्ट के ट्रस्टी हैं। श्री अरविन्द दोशी वर्तमान में श्री बाहुबली ब्रह्मचर्याश्रम एवं विद्यापीठ(बाहुबली-कुंभोज), सेठ वालचंद इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी और आयुर्वेद संस्थान- सोलापुर, श्री कुंथलगिरि सिद्धक्षेत्र, श्री सम्मेदशिखर दिगम्बर जैन बीसपंथी कोठी आदि अनेकों संस्थाओं के चेयरमैन/ट्रस्टी के रूप में सक्रियता पूर्वक जुड़े हैं। वे स्पष्टवक्ता एवं नम्र नेता भी हैं।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी महापरिवार उनके स्वस्थ-स्वास्थ्य एवं दीर्घायु की मंगल कामना करता है।

धम्मो दयाविसुद्धो (आ.कुन्द-कुन्द : बोधपाहुड, गा.25) । अर्थ- शुद्ध भाव से युक्त दयाधर्म हैं।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी

अंचलीय समितियों का गठन

गुजरात अंचल

अध्यक्ष

1. श्री अजितभाई एम. मेहता 09825030906

उपाध्यक्ष

2. श्री गौतमभाई एन.शाह 09328784526
3. श्री रमेशभाई सी. गांधी 09825034739
4. श्री महेशभाई एम. शाह 09427541210
5. श्री कमलेशभाई बी. गांधी 09377781008

महामंत्री

6. श्री सुरेश सी. गांधी 09879368631

मंत्री

7. श्री रोहन आर.कटारिया 09824018000

पूर्वांचल

संरक्षक सदस्य

श्री महावीर प्रसाद सेठी	सरिया
श्री ताराचन्द जी	देवघर
श्री कपूरचंद पाटनी	गुवाहाटी
श्री अजय कुमार जैन	पटना
श्री अशोक कुमार पाण्ड्या	गिरिडीह
श्री भागचंद पहाड़िया	कोलकाता
श्री छीतरमल पाटनी	हजारीबाग
श्री नरेन्द्र कुमार जैन पाण्ड्या	रांची
श्री देवेन्द्र कुमार अजमेरा	गया
श्री पवन बाकलीवाल	कटक (उड़ीसा)
श्री धनकुमार जैन छाबड़ा	मणिपुर

कार्यकारिणी समिति

श्री कन्हैयालाल जैन सेठी, औरंगाबाद	अध्यक्ष
श्री श्रीचन्द पाटनी, भागलपुर	उपाध्यक्ष
श्री धर्मचन्द जी रारा,रांची	महामंत्री
श्री ज्ञानचंद सेठी, गिरिडीह	मंत्री
श्री सुनील अजमेरा, हजारीबाग	संयुक्त मंत्री
श्री महावीर प्रसाद सोगानी,रांची	कोषाध्यक्ष
श्री श्याम पहाड़िया, बोकारो	सह-कोषाध्यक्ष

कार्यकारिणी के सदस्य

तीर्थक्षेत्र यथा श्री सम्मेदशिखरजी/चंपापुर जी एवं मंदारगिरिजी/कोल्हुआ पहाड़/पावापुरीजी/गुणावाजी/कुण्डलपुरजी/राजगिरिजी/खंडगिरि-उदयगिरि जी स्थानों की दिगम्बर जैन पंचायत अथवा संबंधित तीर्थक्षेत्र के अध्यक्ष इस समिति के पदन सदस्य होंगे।

श्री विमल रारा	पटना
श्री सत्येन्द्र जैन	मधुबन
श्री राजू जैन	मधुबन
श्री नरेन्द्र सेठी	गया
श्री विजय रारा	भागलपुर
श्रीमती चन्द्रकला पाटनी	रांची
श्री महेन्द्र जैन बड़जात्या 'सी.ए.'	रांची
श्री स्वरूपचन्द जैन गंगवाल	रफीगंज
श्री सुरेश जी झांझरी	कोडरमा
श्री प्रभात कुमार सेठी	गिरिडीह
श्री सुनील कुमार पाण्ड्या	भागलपुर
श्री कमल कुमार पाटनी	हजारीबाग
श्री विजय कुमार छाबड़ा	गया
श्री कमल कुमार पाटनी	वर्धमान

राजस्थान अंचल

परम संरक्षक

श्री अशोक पाटनी (आर.के.मार्बल्स)	किशनगढ़
श्री गणेश राणा	जयपुर
श्री विवेक काला	जयपुर

संरक्षक

श्री श्रेयांसकुमार गोधा	जयपुर
श्री प्रवीणचन्द्र छाबड़ा	जयपुर
श्री महेन्द्रजी पाटनी	जयपुर
श्री अशोक जैन 'नेता'	जयपुर
श्री सुधीर जैन एडवोकेट	जयपुर
श्री राजकुमार कोठ्यारी	जयपुर
श्री ज्ञानचन्द झांझरी	जयपुर
श्री देवप्रकाश खण्डाका	जयपुर
श्री हेमंत सोगाणी	जयपुर
श्री गुलाबचन्द जैन (चूनावाला)	कोटा
श्री श्रीपाल धर्मावत	उदयपुर
श्री निहालचन्द पहाड़िया	अजमेर
श्री ज्ञानचन्द जैन	तिजारा
श्री खिल्लीमल जैन	अलवर
श्री उमरावमल संघी	जयपुर

अध्यक्ष

श्री राजेन्द्र गोधा (मो.9829900001)	जयपुर

कोषाध्यक्ष

श्री पदमचन्द भौसा	जयपुर

महामंत्री

श्री कमल बाबू जैन (मो.9529888095)	जयपुर

मंत्री

श्री नरेन्द्र कुमार पाण्ड्या	जयपुर

संयुक्त मंत्री

श्री राजेन्द्र बिलाला	जयपुर

वरिष्ठ उपाध्यक्ष

श्री हुकम जैन 'काका'(मो.9414184618)	कोटा

उपाध्यक्ष

श्री उत्तमचन्द पाण्ड्या	जयपुर
श्री अशोक बख्शी	जयपुर
श्री सुरेन्द्र पाण्ड्या	जयपुर
श्री रविन्द्र बज	जयपुर

क्षेत्रीय प्रतिनिधि

श्री राजेन्द्र के. शेखर	पदमपुरा
श्री चन्द्रप्रकाश पहाड़िया	श्रीमहावीरजी
श्री अनिल जैन (आई.पी.एस.)	बसवा

तमिलनाडु, केरल, आंध्र प्रदेश एवं पांडिचेरी अंचल

PARAM SANRAKSHAK

1.	Bhattarak Swami Ji-Melchitamur	9443153753
2.	Bhattarak Swamiji - Tirumalai	9092600778
3.	Shri M.K.Jain	9841029845

SANRAKSHAK

1.	Shri Babu Lal Tholia- Hyderabad	9848070590

जैन धर्म में तपतीर्थ, ज्ञानतीर्थ, संयमतीर्थ आदि कहे गये हैं

2. Shri S.M.Tholia- Hyderabad 9885334567
3. Shri Padam Chand Dhakra- Chennai 9444918024
4. Shri Jai Chand Lal Bakliwal- Chennai 9380313132
5. Shri Vimal Kumar Sethi- Chennai 9282245767
6. Shri Prakash Chand Barjatya- Chennai 9380313132

PRESIDENT

Shri Kamal Tholia, Chennai 9841070589

SECRETARY

Shri Dinesh Kumar Sethi, Chennai 9444031114

VICE PRESIDENT

1. Shri Mahendra Kumar Kala, Cochin 9847045420
2. Shri Rajesh Patni, Hyderabad 9848021013
3. Shri Hemant Paharia, Chennai 9884090044
4. Shri Ghanshyam Ji Jain, Cuddalore 9443336303
5. Shri Saroj Ji Bagra, Salem 9843011144

JOINT SECRETARY

1. Shri Mahsh Sethi, Chennai 9884191722
2. Shri Binod Kumar Tholia, Trivellore 9443275705

TREASURER

Shri Sanjay Tholia, Pondichery 9443616595

COMMITTEE MEMBERS

1. Shri S.K.Tholia, Hyderabad 9848077077
2. Shri Ajay Tholia, Hyderabad 9848055097
3. Shri Sohan Lal Pahariya, Pondicherry 9443366392
4. Shri Bhagchand Shirayat, Pondicherry 9345023675
5. Shri Lalit Barjatya, Chennai 9884398900
6. Shri Sanjay Dhakra, Chennai 9444023550
7. Shri Anil Kasliwal, Chennai 9385202824
8. Shri Mukesh Tholia, Chennai 9840022784
9. Shri Pradeep Kumar Chennai 9841026040
10. Shri Jeetendra Barjatya, Chennai 9380080008
11. Shri Manish Bakliwal, Chennai 9381025409
12. Shri Kamlesh Jhajhri, Chennai 9840087601
13. Shri Umesh Chandwad, Chennai 9840093310
14. Shri Ashok Barjatya, Chennai 9840213131
15. Srhi Rajendra Prasad, Chennai 9841055783
16. Shri Jeeva, Chennai 9841014661
17. Shri Chinnappa, Chennai 9443987737
18. Shri Ajit Prasad Jain, Chennai 9940030200
19. Shri CSP Jain, Chennai 9444053510
20. Shri Sharat Gangwal, Chennai 8754599047
21. Shri Jeeva, Birudur 9894993938
22. Shri Sanjay Sethi, Chennai 9444455502
23. Shri Rajkumar Chhabra, Erode 4242252642
24. Shri Ganpat Lal Ji Bagra, Madurai 9543844455

दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कुण्डलपुर (दमोह) पर जैन प्रतिमाएं खण्डित करने पर रोष व्याप्त

इंदौर। भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी मध्यांचल के अध्यक्ष श्री विमल सोगानी एवं मंत्री श्री जैनेश झांझरी ने बताया कि दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र कुण्डलपुर (दमोह) दिगम्बर जैन आस्था का केन्द्र होकर अति प्राचीन तीर्थक्षेत्र है। दिनांक 10 अक्टूबर को कुछ असामाजिक तत्वों ने मंदिर क्रमांक 52 एवं 57 जो तालाब के सामने स्थित है, वहां मूलनायक भगवान की प्रतिमाएं खण्डित कर दीं।

कुण्डलपुर के आसपास पहाड़ी पर असामाजिक तत्वों का जमावड़ा लगा रहता है। वे वहाँ मदिरापान करके उपद्रव करते हैं। जैन अहिंसक समाज है, ऐसे तत्वों के विरुद्ध सुरक्षा देना साकार का दायित्व है।

जैन समाज की सभी संस्थाओं ने इस हेतु आज डिप्टी कमिश्नर संघमित्रा गौतम को माननीय मुख्यमंत्री के नाम ज्ञापन दिया एवं ऐसे शरारती तत्वों को गिरफ्तार कर तीर्थ की सुरक्षा प्रदान करें अन्यथा जैन समाज को अहिंसक आंदोलन करना पड़ेगा, जिससे समाज में रोष व्याप्त है। प्रतिनिधि मण्डल में अल्पसंख्यक आयोग के सर्वश्री दिलीप राजपाल, सुरेन्द्र जैन बाकलीवाल, डी.के.जैन, प्रदीप बड़जात्या, अनिल जैन जैनको, प्रशांत घाटे, प्रतिपाल टोंग्या, वीरेन्द्र बड़जात्या, विपिन गंगवाल, आनंद कासलीवाल, महावीर जैन, श्रीम साधना दगड़े, कांता काला, संजीव जैन, प्रदीप जैन (भल्ला), जयदीप जैन, राजेन्द्र जैन, शिरीष जैन, अभय झांझरी, जिनेन्द्र सेठी, पंकज जैन आदि समाजजन उपस्थित थे।

- जैनेश झांझरी, इंदौर

युवा समाजसेवी श्री जैनेश झांझरी शहर कांग्रेस कमेटी इंदौर के महामंत्री मनोनीत

इंदौर। भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी मध्यांचल के मंत्री, दिगम्बर जैन महासमिति इंदौर के अध्यक्ष, दिगम्बर जैन सोशल ग्रुप जैनम के उपाध्यक्ष, जैन संस्कृति मंच एवं दिगम्बर जैन सोशल ग्रुप सम्यक के प्रचार सचिव, दिगम्बर जैन समाज रजिस्टर्ड इंदौर के संगठन मंत्री, ऋषभदेव गौरव न्यास के सहसचिव, दाल चावल दलाल एसोसिएशन के सचिव, अखिल भारतीय प्रज्ञ श्री संघ के वरिष्ठ उपाध्यक्ष, युवा समाजसेवी श्री जैनेश झांझरी को मध्यप्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष श्री अरुण यादव के निर्देश पर शहर कांग्रेस कमेटी अध्यक्ष श्री प्रमोद टण्डन द्वारा शहर कांग्रेस कमेटी का महामंत्री मनोनीत किया गया। इनके मनोनयन पर राजनीतिक व सामाजिक संस्थाओं के पदाधिकारियों ने बधाई प्रेषित की।

जिसमें जिनदेव विराजमान हैं, वह तीर्थ है (उत्तरपुराण 54, 5)

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी एवं अ.भा.दि.जैन विद्वत्परिषद् के तत्त्वावधान में विदिशा में आयोजित तत्त्वचर्चा संगोष्ठी में वरिष्ठतम आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के प्रेरक विचार

आचार्य श्री समन्तभद्र भगवान् न्यायनिष्ठ होकर अहिंसा तीर्थ की प्रभावना में संलग्न रहे। वे 'युक्त्यनुशासन' में लिखते हैं कि–

दयादम त्यागसमाधिनिष्ठं नय–प्रमाणप्रकृतांजसार्थम्।
अघृष्यमन्यैरखिलैः प्रवादैर्जिनत्वदीयं मतमद्वितीयम्।।

अर्थात् हे भगवन्! आपका शासन नय, प्रमाण के द्वारा वस्तु तत्त्व को बिल्कुल स्पष्ट करने वाला और सम्पूर्ण प्रवादियों द्वारा अबाध्य होने के साथ–साथ दया, अहिंसा, दम–संयम, त्याग और समाधि; इन चारों की तत्परता को लिए हुए है और यही सब उसकी विशेषता है। इसीलिए वह अद्वितीय है।

हे भगवन् आपका मत अद्वितीय है। अन्यत्र कहीं भी इसका चित्रण नहीं मिला। दया ऐसी जो निष्ठापूर्वक हो। उन्होंने निष्ठा को अन्त्यदीपक की तरह इस्तेमाल किया है। दया के प्रति निष्ठा, क्षमा के साथ निष्ठा, दम के साथ निष्ठा, त्याग के साथ निष्ठा, समाधि के साथ निष्ठा आवश्यक है। इस कारिका में आचार्य श्री समन्तभद्र ने सर्वप्रथम कारण–कार्य व्यवस्था बतलायी है। आपका यह तीर्थ अद्वितीय है। आगम तीर्थ है। आगम वेत्ता होना अनिवार्य है। जहाँ दया होती है वहाँ निष्ठा के साथ अपना कार्य पूरा होता है। हमारे गुरुवर आचार्य श्री ज्ञानसागर जी महाराज ने हमें आशीर्वाद दिया था कि संघ को गुरुकुल बना देना। कुल कहाँ बनेगा जहाँ पात्र होंगे। जहाँ पात्र होंगे वहाँ अपने आप पैर चलते चले जाते हैं। जिधर भक्ति होगी उस ओर पैर पड़ेंगे। महावीर भगवान् की चर्या कहाँ हुई ? नृपति कूल के घर। तीर्थंकर आदिनाथ की आहार चर्या कहाँ हुई? राजा श्रेयांस के यहाँ हस्तिनापुर में। चर्या के पालन में पुण्यात्मा का ही योग लगेगा।

श्रमणों को निमंत्रण देना बहुत कठिन है। वे मानेंगे नहीं। आपको भी मानना नहीं है। होगा तो वहीं आहार, जिसका पुण्य तेज होगा। यहाँ मान–मनौवल नहीं चलती, नवधाभक्ति चलती है। दया व्यवस्था के साथ आपका तीर्थ चल रहा है। क्योंकि–

दया– दमस्यकारणं
दमा– समस्यकारणं
समा– समाधिकारणं
समाधि– मोक्षस्यकारणं

स्वीकार किया गया है। अभी हमने पथ की बात नहीं की। श्रुत का पार नहीं, काल बहुत कम है। रुकने, रोकने की बात गलत है। यह स्वतंत्र सत्ता है। दया को भूलोगे तो निश्चित रूप से इन्द्रियाधीन हो जाओगे। आत्मा का साधन इन्द्रिय है। उनका उपयोग करो। मेरा एक हायकू है–

मन का काम मत करो
मन से काम लो
मोक्ष सामने है।

भगवान् महावीर के तीर्थ में कोई परिवर्तन नहीं होता इसीलिए वह अद्वितीय है। जब सूर्य, चन्द्र, प्रकृति में परिवर्तन नहीं तो मानव प्रकृति परिवर्तन का क्यों सोच रही है ? दया का पालन करो। स्वदया, परदया पालो।

समधी से समाधि

पहले समधी बनो फिर समाधि करो। परिग्रह त्याग रूप प्रतिमा के समय समधी शब्द आया है।

समधी का तात्पर्य है– समीचीनधी अर्थात् समुचित बुद्धि। जब समधी होगी तो समाधि का मार्ग प्रशस्त होगा। परिग्रह को आप रखते हो या परिग्रह आपको रखता है? परिग्रह भले ही दूर रखा है किन्तु उसका वियोग असहनीय हो जाता है। हमारी धी (बुद्धि) वीतरागी भगवन्तों, समाधिनिष्ठ मुनियों के समान होना चाहिए तभी हम समधी कहलायेंगे और हमारी समाधि संभव होगी। समाधि चतुर्थगुणस्थान में संभव नहीं है। जब समधी को समधी मिला तो भार उतर गया अब भगवान् दिखने लगे। अपरिग्रह के प्रति आस्था होना ही समधी है। इसी समाधि होगी।

प्रस्तुति–कर्मयोगी डॉ. सुरेन्द्रकुमार जैन

करें राष्ट्र का पुनर्निर्माण : इंडिया हटाइए भारत लौटाइए

- विजयलक्ष्मी जैन (सेवानिवृत्त उपजिलाधीश), इंदौर

पाठकों,

इस समय मुझे आपकी मदद की सख्त जरूरत है। मेरी बहुत कीमती चीजें खो गई हैं। मैं नहीं समझ पा रही हूं कि इन्हें कहां ढूंढूं, किस थाने में रपट लिखवाऊं?

मेरी इन खोई हुई बहुमूल्य निधियों की सूची बड़ी लंबी है। एक को स्मरण करती हूं तो दो और याद आ जाती हैं। इनका खो जाना मैं रोक नहीं पा रही हूं और इन्हें ढूंढ भी नहीं पा रही हूँ। इस आश और विश्वास से आपको बता रही हूं कि आप प्रतिभाशाली हैं, योग्य हैं, जरूर कोई उपाय करेंगे मेरी खोई हुई सम्पदाओं को खोज निकालने का।

तो सुनिए, मेरा देश खो गया है। मेरे देश का नाम ही खो गया है। कभी मेरे देश का नाम **'भारतवर्ष'** था, अब **'इंडिया'** हो गया है। मेरा देश जिसका नामकरण कर्मभूमि के प्रारम्भ में आदि तीर्थंकर भगवान श्री ऋषभनाथ के पुत्र **भरत** के नाम पर हुआ था, भगवान श्री राम के अनुज **भरत** ने जिसे अपने आदर्श चरित्र से सार्थक किया था और कालीदास के **भरत** ने भी जिसे गौरवान्वित किया, वह देश जिसमें राम की मर्यादा का पालन होता था, कृष्ण की वंशी की मधुर स्वर लहरी यमुना की तरंगों से अठखेलियां खेलती थी, महावीर की दिव्य ध्वनि का निनाद जिसमें गुंजायमान था, बुद्ध का बोधित्व जिसमें मनस्वियों के चिंतन को प्रखरता देता था, खो गया है। मेरा वह महान **भारतवर्ष** जिसमें सुख था, शांति थी, समृद्धि और संतोष था, जिसमें **'वसुधैव कुटुम्बकम्' की अवधारणा जनजीवन का आधार थी,** जिसमें केवल मनुष्य ही नहीं, जीव मात्र के प्रति वात्सल्य और करूणा थी कहीं खो गया है, **'इंडिया'** हो गया है।

कैसा था वह **भारतवर्ष**?

अंग्रेजों के आगमन तक हमारा **भारतवर्ष** कैसा था? कैसा था वह **भारतवर्ष जो सोने की चिड़िया** कहलाता था? जिसके बारे में अंग्रेज लार्ड मैकाले ने ब्रिटिश संसद में कहा था कि **इस देश के कोने-कोने में भ्रमण करने पर भी मुझे न कोई भिखारी मिला, न कोई चोर। यह देश उच्च प्रतिभा सम्पन्न लोगों का देश है, अतः इसे गुलाम नहीं बनाया जा सकता।**

यह बात शायद आप जानते हों कि **भारत** को निराधार ही **सोने की चिड़िया** नहीं कहा जाता था। हमारा देश वस्तुतः इस उपमा के योग्य था कभी। विदेशी व्यापार की वर्तमान स्थिति को देखकर यह अविश्वसनीय लगता है कि **कभी हम विश्व के कुल निर्यात का तैंतीस प्रतिशत निर्यात किया करते थे।** दैनिक उपभोग की उत्तम गुणवत्ता युक्त वस्तुएं हम समग्र विश्व को बहुत ही उचित मूल्य पर उपलब्ध कराते थे और बदले में लेते थे केवल हीरे, जवाहरात, सोना और चांदी। हमारे देश का कपड़ा इतना मृदु और महीन होता था कि पाश्चात्य देशों की संभ्रांत महिलाएं **भारतवर्ष** से कपड़ा लेकर जाने वाले जहाजों की प्रतीक्षा में अपने कारिंदों को रात-रात भर समुद्र तट पर खड़ा करती थीं, इस भय से कि कहीं प्रातःकाल से पूर्व ही सारा कपड़ा बिक न जाए और उन्हें भारत के उच्च कोटि के वस्त्रों से वंचित ही रहना पड़े। हमारे देश में निर्मित इस्पात (स्टील) इतना अद्‌भुत था कि सालोंसाल पानी में पड़ा रहने पर भी उसमें जंग नहीं लगता था। देश की राजधानी दिल्ली में कुतुब मीनार के समक्ष शान से सिर उठा कर खड़ा हुआ मेहरौली का लोहस्तंभ इसका जीवंत प्रमाण है। हमारे इस्पात की इसी गुणवत्ता के कारण तो ईस्ट इंडिया कंपनी के जहाजों में भारतीय इस्पात का बहुतायत से उपयोग होता था। तब हम एक कृषि प्रधान समाज होकर उद्योग प्रधान समाज थे। कुटीर उद्योगों का एक सुविस्तृत मजबूत ढांचा था जिसमें हर हाथ के लिए काम था और हर तरह की योग्यता के लिए सम्मानपूर्ण स्थान था। साथ ही प्राप्त आय के न्यायोचित वितरण की कुछ ऐसी व्यवस्था थी जो समाज के हर वर्ग को इतना संतुष्ट, समृद्ध और नैतिक बनाए रखती थी कि किसी को भी जीवनयापन के लिए चोरी या भिक्षावृत्ति जैसे उपाय अपनाने का विचार भी नहीं आता था। घरों में ताले लगाने की जरूरत नहीं पड़ती थी। लार्ड मैकाले को चोर और भिखारी मिलते भी तो कहां से?

हम कृषिप्रधान समाज न होकर भी कृषि में उन्नत थे। बहुत थोड़ी भूमि में इतना उत्पादन कर लेते थे कि कहीं भी भोजन अभाव नहीं था। हमारे खेतों में काम आने वाले कृषि उपकरणों के नमूने अंग्रेजों द्वारा अपनी सरकार को मिसाल के तौर पर भेजे गए थे ताकि उनकी नकल करके ब्रिटेन में भी उन्नत कृषि की जा सके। अंग्रेज तब तक तकनीकी कृषि से वाकिफ नहीं थे। भारतवर्ष की हस्त कलाएं अद्वितीय रूप से विदेशों में लोकप्रिय थीं। अन्य और बहुतेरी विशेषताओं के साथ भारत विश्व व्यापार में सिरमौर बना हुआ था।

यह जानकारियां मुझे भी न होतीं यदिमेरे गुरु पूज्य संत श्री विद्यासागरजी ने मुझे भारत का असली इतिहास पढ़ने के लिए प्रेरित न किया होता। वर्तमान में विद्यालयों में हमारे देश का जो इतिहास पढ़ाया जाता है वह हमारे पतन का इतिहास है जो हमें आत्महीनता से भर देता है। वास्तविक भारत को जानने, समझने के लिए उन्होंने मुझे स्व.धर्मपाल जी की दस पुस्तकें पढ़ने की प्रेरणा दी, जो कि स्वतंत्रता संग्राम में गांधीजी के निकट सहयोगी थे। इन किताबों में दर्ज भारतवर्ष के इतिहास ने मुझे रोमांचित कर दिया। इन्हें पढ़कर ही मैं जान पाई कि मेरे देश को जगद्‌गुरु या सोने की चिड़िया कहना कोई गल्प नहीं था। ये दस पुस्तकें स्व. धर्मपाल जी द्वारा रचित ग्रंथ न होकर अधिकतर उन पत्रों का संकलन है जो भारत आने वाले विदेशी व्यापारियों ने भारत की समृद्ध जीवन शैली और उन्नत तकनीक से अभिभूत होकर अपनी सरकार को लिखे थे। अतः इन दस पुस्तकों में रचयिता ने देशप्रेम के वशीभूत भारतवर्ष की महानता के वर्णन

ज्ञान एक ऐसा धन है, जो मन को भी अपने वश में कर लेता है।

में कोई पक्षपात किया होगा, इसकी कोई संभावना नहीं है। इन दस पुस्तकों में अंग्रेजों की कलम से लिखा गया भारतवर्ष का वह उज्ज्वल इतिहास है, जो हम पर कभी उजागर ही न हो पाता यदि स्व. धर्मपाल जी ने लगातार वर्षों तक पाश्चात्य जगत के ग्रंथालयों और संग्रहालयों की धूल न फांकी होती। इस खोज में उन्होंने अपना जीवन खपा दिया पर इन किताबों के रूप में हमारे हाथों में खोए हुए भारतवर्ष की तस्वीर थमा गए।

ई.सन् 1498 में वास्कोडिगामा द्वारा भारतवर्ष को खोज लेने के उपरांत मुगल शासक जहांगीर के शासनकाल में पाश्चात्य विश्व के कई देशों से व्यापारिक प्रतिष्ठानों (कंपनियों) का आगमन हमारे देश में प्रारम्भ हुआ। विभिन्न देशों के ये प्रतिष्ठान आए तो थे व्यापार करने लेकिन यहां की समृद्धि और उच्च जीवन स्तर देखकर उनकी आंखें चौंधिया गई। ऐसे सम्पन्न भू-भाग पर कब्जा करने के लिए उनमें आपस में ही तीव्र प्रतिस्पर्धा छिड़ गई। तत्कालीन मुगल शासकों की अविवेकपूर्ण नीतियों के परिणाम स्वरूप इंग्लैंड की ईस्ट इंडिया की ईस्ट इंडिया कंपनी इस प्रतिस्पर्धा में विजयी रही जिसे सेतु बनाकर भारत की सत्ता के सूत्र अंतिम मुगल शासक बहादुरशाह जफर के हाथ में निकलकर अंततः इंग्लैंड की महारानी के हाथों में पहुंच गए। हम सोते रहे, लुटते रहे और **'भारतवर्ष' इंडिया** हो गया। तात्कालीन रजवाड़ों की आपसी फूट और अंग्रेजों की लूट और शोषण की राजनीति के एक लंबे सिलसिले ने हमें एक गरीब और गुलाम देश बनाकर रख दिया। बंदर और सपेरों का नाच दिखाने वाले, अशिक्षित और अंधविश्वासों में जकड़े हुए देश के रूप में हमारी प्रसिद्धी हो गई। जगद्गुरु की उपाधि धारण करने वाला गौरवमयी **भारतवर्ष** खो गया। अब हमारे देश का नाम इंडिया हो गया। अब हम **भारतीय** नहीं रह गए, **इंडियन** हो गए। ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के अंग्रेजी शब्दकोष में जिसका अर्थ लिखा गया **'आपराधिक प्रवृत्ति के पुरातन पंथी लोग'।** विश्व को अहिंसा का संदेश देने वाला, युद्ध और व्यापार में भी उच्च नैतिक सिद्धांतों का पालन करने वाला देश हिंसक, साम्राज्यवादी ताकतों के षडयंत्र का शिकार होकर **'ओल्ड फैशन्ड अफेन्सिव'** के रूप में दर्ज हो गया। यह पढ़कर हृदय क्रंदन कर उठा।

'ओल्ड फैशन्ड अफेन्सिव' मुझे स्वीकार नहीं है अपने लिए, अपने देशवासियों के लिए यह संबोधन। क्या आपको स्वीकार है? क्या हम भारतवासी ऐसे हैं?

यदि नहीं तो आज से ही प्रारम्भ कर दीजिए अपने देश को इंडिया से पुनः **भारतवर्ष** बनाने का उद्यम। एक अकेला मैकाले भारतवर्ष को इंडिया बनाने में सफल हो गया तो क्या **हम सवा अरब भारतीय** इंडिया को पुनः भारत बनाने में सफल नहीं होंगे?

हम अवश्य ही सफल होंगे, इसमें मुझे कोई संदेह नहीं है। हमारा देश आज भी प्रतिभा संपन्न लोगों का देश है। हमारा **भारतवर्ष** जो कभी हमारे दिलों में बसता था, उसे हम अपने दिलों में ही पुनः पा सकें तो अवश्य ही सफल होंगे। इस सफलता को पाने के लिए **हम भारतवासी** पहला संकल्प यह करें कि हम सब अब देश में रहें या देश से बाहर हर अवसर पर अपने देश को **भारतवर्ष** और स्वयं को **भारतीय** ही कहेंगे, इंडिया और इंडियन नहीं।

हम स्वयं ऐसा संकल्प करें और हर देशवासी तक यह संकल्प पहुंचाने के लिए अपने आसपास के लोगों से लगातार संवाद करें और उन्हें भी यह संकल्प करने के लिए प्रेरित करें। विदेशों में बसे अपने भारतीय स्वजनों और मित्रों से खासतौर पर यह अपेक्षा करें कि वे अब अपने देश को इंडिया न कहकर भारतवर्ष ही कहें। भारत सरकार तक यह संदेश पहुंचाने का उद्यम करें कि अब अंतर्राष्ट्रीय पत्राचार और व्यापार में अपने देश के लिए भारतवर्ष और देशवासियों के लिए भारतीय शब्द का ही उपयोग किया जाए, इंडिया और इंडियन का नहीं। हम अपने विदेशी मित्रों से भी दृढ़तापूर्वक आग्रह करें कि हमारे देश को भारतवर्ष ही कहा जाए, इंडिया नहीं और हमें भारतीय कहा जाए इंडियन नहीं। हम ऐसा कर सकें तो ही हमारे कौशल की सार्थकता है और जीवन की भी। भारतवर्ष के पुनर्निर्माण के लिए हममें से प्रत्येक को कटिबद्ध योद्धा बनना होगा।

किसी बदलाव का कोई तयशुदा नुस्खा नहीं होता।
बदल सकता है जो खुद को वही सबको बदलता है।।

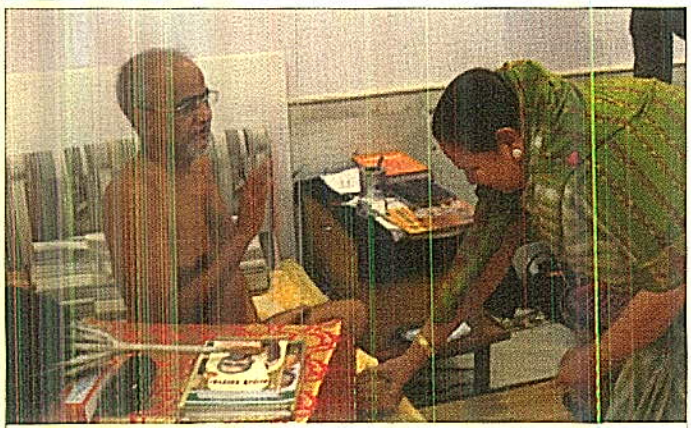

तरुणसागरजी के दर्शनार्थ पहुंची हिमाचल की राज्यपाल

दिल्ली:- 8 दिसं. 2014:- सोमवार, हिमाचल की राज्यपाल महामहीम उर्मिला सिंहजी ने लक्ष्मीनगर ब्रैंक इंक्लेव पहुंचकर क्रांतिकारी राष्ट्रसंत मुनिश्री तरुणसागरजी के आशीर्वाद लिया। मुनिश्री और महामहीम के बीच आध्यात्मिक और राजनैतिक विषयों पर लगभग 50 मिनिट चर्चा हुई।

बालाचार्य सिद्धसेन जी महाराज ससंघ ने जयपुर से श्रवणबेलगोला बाहुबली की ओर मंगल विहार किया

न्यायनिष्ठ की सम्पत्ति कभी कम नहीं होती । वह दूर तक पीढ़ी दर पीढ़ी चली जाती है (तिरुवल्लूर)

विनम्र अपील

दिनांक 30 जनवरी, 2015 को दिल्ली राजघाट पर आयोजित इस अहिंसा रैली में जैन समाज के अधिक से अधिक लोगों को भाग लेने के लिए दिल्ली पधारना है। बाहर गांव से पधारने वाले सभी महानुभावों के लिए आवास एवं भोजन की व्यवस्था की गई है। राजघाट पर पूज्य बापूजी को श्रद्धांजलि अर्पित प्रात: 11 बजे से राजघाट के सामने समता स्थल के पास ग्राउण्ड पर, अल्पाहार प्रात: 9 से 10.30 बजे तक होगा। उसके बाद वहाँ से जुलूस के रूप में जंतर-मंतर पहुंचेगा। वहाँ 5.30 बजे तक मुख्य कार्यक्रम होगा जिसमें देश के बड़े-बड़े राजनेता सभा को संबोधित करेंगे। कार्यक्रम के बाद भोजन की व्यवस्था की गई है। कृपया आप अपने साथियों, मित्रों के साथ अहिंसा रैली में सम्मिलित होकर कार्यक्रम सफल बनायें।

सुधीर जैन

राष्ट्रीय अध्यक्ष

एवं

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी महापरिवार

श्रद्धांजलि

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के आजीवन सदस्य तथा स.सिं.प्रसन्न कुमार जैन, कटनी के ज्येष्ठ पुत्र एवं सवाई सिंघई सुधीर जैन, राष्ट्रीय अध्यक्ष के भतीजे, युवा व्यवसायी सलिल जैन के 28 नवम्बर को हुए आकस्मिक निधन से सारा शहर स्तब्ध रह गया। स्व. सलिल जैन 'वन्य प्राणी संरक्षण संस्थान' के फाउंडर ट्रस्टी थे। म.प्र. के मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने कटनी में आयोजित चुनावी सभा के दौरान, मंच से हृदयाघात से निधन की जानकारी देते हुए विधायक श्री संजय पाठक, विधायक श्री संदीप जायसवाल के साथ श्रद्धांजलि अर्पित की।

मुक्तिधाम में, अंतिम संस्कार में बहुत बड़ी संख्या में स्नेहीजन, जैन समाज के सभी लोग, राजनैतिक हस्तियों, युवा साथियों, व्यवसाय जगत के प्रमुखों एवं गणमान्यजनों ने अंतिम विदाई दी।

अनभ्र वज्रपात

यह सूचित करते हुए अत्यन्त दु:ख हो रहा है कि जैन समाज के ऊर्जावान, युवा व्यवसायी, सिवनी (म.प्र.) निवासी 22 वर्षीय श्री मोहित कोसल सुपुत्र श्री मुकेश कोसल, सतना का दिनांक 1 दिसम्बर 2014 को कार एक्सीडेन्ट में दु:खद निधन हो गया। श्री मोहित कौशल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी मध्यांचल के स्तम्भ श्री प्रेमचंद प्रेमी एवं श्री रमेशचन्द जैन इंजीनियर, सतना के भांजे थे एवं वे पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव केमोर से राजा श्रेणिक के रूप में आहार दान हेतु सतना से निकले थे लेकिन विधि के विधान ने इन्हें असमय ही सबसे छीन लिया।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी महापरिवार दिवंगत आत्माओं के प्रति अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके शोक संतप्त कुटुम्बीजनों को यह अपार दु:ख सहन करने की शक्ति मिले, ऐसी वीर प्रभु से प्रार्थना करता है।

श्री महावीर ग्रुप ऑफ इण्डस्ट्रीज

संस्थापक एवं निदेशक
दयाचन्द जैन (फ्रीडम फाईटर)
मो. 98141 75293

IN THE SERVICE OF NATION 1970 ESTD.

मैनेजिंग डायरेक्टर
राजेन्द्रकुमार जैन
मो. 98140 92613

जगराओ (पंजाब)	श्री गंगानगर (राजस्थान)	जम्मू (कश्मीर)	कोलकाता (बंगाल)
223191, 223103	2494412	2547876	98304 86979
222 093, 228962	2494413	2547239	99973 4272

संतो हि हितभाषिण: (उत्तरपुराण, पर्व 70, श्लोक 325) । अर्थ- साधु-संत आत्महित का उपदेश देते हैं ।

जीव रक्खणं धम्मो ! अहिंसा परमो धर्मः ! दया विशुद्धो धम्मो !

जीव रक्षा हेतु (माँस निर्यात बंद कराने) चलो दिल्ली! चलो राजघाट! चलो जंतर-मंतर!

अहिंसा भारत के संविधान की आत्मा है, हिंसा से संविधान की ही हत्या हो रही है। भारत माता की हत्या हो रही है : हम भारत वासियों की हत्या हो रही है ! अतः हिंसा को तुरंत रोकें।

30 जनवरी 2015 अर्थात पूज्य बापू (राष्ट्रपिता महात्मा गांधी) की पुण्य तिथी

अहिंसा के अवतार आत्मज्ञानी संत शिरोमणी 108 आचार्य **श्री विद्यासागर जी महामुनिराज**

हिंसा रोको, गाय बचाओ, भैंस बचाओ, पूरा पशुधन ही बचाओ क्योंकि इनकी अमृत तुल्य जैविक खाद उपलब्ध नहीं होने से हम भारतवासीयों को रसायनिक उर्वरकों एवं कीटनाशकों के जहरीले अन्न, फल, सब्जियां आदि खाकर तिल-तिल कर बैमोत मरना पड़ रहा है; और हमारी पूरी धरती ही प्रदूषित(विषाक्त)हो गई है

"हिंसा में दुःख, अहिंसा में सुख है, अनंत सुख है। अतः हिंसा का त्याग करो और अहिंसा को अपनाओ।"

-आत्मज्ञानी संत शिरोमणी 108 गुरुवर्य आचार्य श्री विद्यासागर जी महा मुनिराज

"मेरा धर्म सत्य और अहिंसा पर आधारित है, सत्य मेरा भगवान है, अहिंसा उसे पाने का साधन."

-राष्ट्र पिता महात्मा गांधी

अहिंसा के उपासक उपदेष्टा राष्ट्रपिता **बापू (महात्मा गांधी)**

क्या यह भाजपा सरकार भी गाय भैंस आदि का माँस बेचकर (निर्यात) धन कमाना चाहती है?

भारत का विश्व में सबसे बड़ा माँस निर्यातक राष्ट्र होना गर्व नही कलंक की बात है - जघन्य अपराध है! अतः माँस निर्यात पर तुरंत प्रतिबन्ध लगाया जाऐ

आत्मज्ञानी, संत शिरोमणि पू. मु. 108 आचार्य श्री विद्यासागरजी अपने प्रिय योग्य शिष्य 7 प्रतिभाशाली इं॰ अमृतश्रीजी (A.K. Jain, Engineer) को प्रसन्नता से जीव रक्षा हेतु विशेष आशीर्वाद प्रदान करते हुऐ!

इ.जी ने सुप्रीम कोर्ट में करीब 10 साल लड़कर यह सिद्ध कर दिया कि बूढ़ा गौवंश भी उपयोगी है और 7 जजों की संविधान संघ्द पीठ से जीत कर भी आ गये गुजरात सरकार बनाम गुजरात की मोटी कुरेशी जमात, इसमें चारों ही अपील अहिंसा शर्मी ट्रस्ट की थी (Ref.SCC 2005 Vol. 8 P.534)

इ.जी को भारत के अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मेले (IITF-2005) में प्रेक्टिकली बूढ़े पशुओं की उपयोगिता सिद्ध करने पर भारत सरकार ने तीनों मिलिट्री के बैण्डो की धुनों के साथ सम्मान प्रमाण-पत्र के साथ पुरुस्कार भी प्रदान किया गया।

इ. जी, श्रीमति लता कृष्णमूर्ती (AOR Supreme Court) और रक्षा की समर्पित अॅडवेटी अधिवक्ता के सम्मान प्रदान करते हुए।

मुख्य न्यायधीश द्वारा 50 लाख रु. कसाईयों के बतौर मुआवजा देने का आदेश करने पर गुजरात सरकार ने अपने हिस्से के 25 लाख रु. गंगाजमना के साथ भर भी दिए तो भी हर्ष जी, सिंघानिया जी, इ.जी ने विशेष अधिवक्ता डॉ. रामनेश महाबी जी एवं लता कृष्णमूर्ति जी से पैरवी करकर गौ सेवक राकेश शाह के सम्मान कलेक्ट एवं 25 लाख रु. दोनों से वसूल करा लिया।

वरिष्ठ अधिवक्ता श्री अरविन्द शर्मा जी, हमारे मुख्य कानूनी सलाहकार (Ex. Sr. Advocate C.B.I. in Supreme Court)

गौ माता तो आज भी हलाल हो ही रही है

बकरा ईद एवं सामान्य दिनों में भी गाय एवं ऊँट कटे जा रहे हैं।

हमारे प्रमुख सहयोगी अन्तर्राष्ट्रिय संत श्री बाबा रामदेव जी पतंजली एवं भारत स्वाभिमान सहित

इ.जी अपने सहयोगीयों, जीव रक्षक श्रेष्ठी श्री प्रभात जी मुम्बई, श्री अशोक पाटनी (आर. के. मार्बल्स) श्री पंकज जी(पारस चैनल) आदि जा. श्री के अनन्य भक्तों के साथ विजय लाइ रहते हुए।

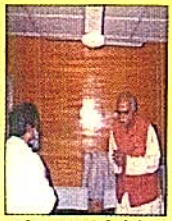

हमारे प्रमुख सहयोगी गौ सेवक श्री लाल कृष्ण आडवाणी जी पूर्व गृहमंत्री एवं उप प्रधानमंत्री भारत सरकार

हमारी सरकार से निम्न प्रमुख माँगे है :-

1. पूर्ण प्रतिबन्धः- माँस व माँस उत्पादों के आयात-निर्यात पर जीवित पशुओं के वैध/अवैध निर्यात पर नए वूचड़खाने खोलने पर माँस उत्पादों के प्रचार-प्रसार पर माँस व्यापार/निर्यात हेतु किसी भी प्रकार की राजकीय /केन्द्रीय सरकारी आर्थिक सहायता/अनुदान/टैक्स में छूट पर पूर्ण प्रतिबन्ध तुरंत लगाया जाय।
2. गौवंश (BOVINES) को "राष्ट्रीय पशु" घोषित किया जाए। **गौमाता को राष्ट्रमाता घोषित करने में भाजपा सरकार क्यों देरी कर रही है?**
3. भारत की सभी राजकीय व केन्द्रीय न्यायिक विज्ञान प्रयोगशाला में पशु माँस (कच्चा या पका हुआ) के परीक्षण हेतु डी. एन. ए. तकनीक का प्रयोग किया जाए, क्योंकि डिप्यूजन आदि तकनीक शकास्पद हैं; ऐसा मुम्बई FSL ने हमारे प्रतिनिधी श्री खुशाल जैन CA की RTI में स्वीकार किया है। सरकार गौरक्षक N.G.O. को कुछ विशेष अधिकार दे दें तो वे और ज्यादा अच्छा सहयोग कर पायेंगे।
4. सभी तरल और ठोस भोजन व पेय पदार्थों, दवाईयों और सौंदर्य प्रसाधन आदि उत्पादों पर शाकाहार/माँसाहार आलेख एवं चिन्हरोंअंकित होना अनिवार्य होऔर यह चिन्ह उत्पाद में प्रयोग होने वाले वास्तविक संघटक (e-Nos.) के आधर पर हो। **अण्डा शाकाहार कैसे? वह भी तो मुर्गी के मुख से नहीं योनी से ही निकलता है।**

इन निरपराध, निरीह, अबोले, निर्दोष प्राणियों (पशुधन) की निर्मम हत्या करने के जगन्य अपराधों को तुरंत बंद किया जाए; अब अगर इनके खून का एक कतरा भी बहाया गया तो बड़े स्तर पर राष्ट्र व्यापी जन आन्दोलन तो होंगे ही साथ ही सर्वोच्चय एवं उच्च न्यायालयों में हजारों की संख्या में याचिकाऐं भी प्रेसित की जाऐंगी। अहिंसा हमारी मांग नही अधिकार है, जीवनशैली है

आयोजकः (1) श्री अहिंसा-आर्मी मानवकल्याण, जीवदया पेरेंटिवल ट्रस्ट, (2) अहिंसा दयोदय महासंघ- सहस्त्राधिक गौशालाओं-पशुशालाओं का संगठन(पू. गुरुवर्य आ. श्री विद्यासागरजी की प्रेरणा से) (3) पारस चैनल (अहिंसा का उद्योष)

निवेदकः (1) भारत स्वाभिमान- बाबा रामदेव जी का राष्ट्र बचाओ अभियान (2) अधिवक्ता श्री तन्वीर अहमद एवं उनकी सहयोगी संस्थाऐं (3) अधिवक्ता श्री परमानन्द जी मित्तल अध्यक्ष गौ आयोग, गौ रक्षक आशु गोभीवा एवं उनकी पूरी पशु रक्षक सेना (अनिल तिवारी, विजय खुराना, स्वामी ब्यानानन्द, महेश अहुजा, जय प्रकाश गुजर,श्री विशेष शर्मा (हे कृष्ण कम्युनिटी), जय भगवान गोयल, आशा स्वामी, रमेश पाण्डे, विंदनेश, राजीव गुप्ता, आदि) (4) भारत के सभी अहिंसा जीवदया प्रेमी पशुरक्षक, (5) पांजरा पोलों एवं पशुशालाओं के संचालक एवं सेवक, (6) विश्व जैन संगठन, दिल्ली, (7) वर्धमान संस्कारधाम, मुम्बई (8) गौ सेवा आयोग गुजरात, राज., म.प्र. आदि (9) AWBI- Chennai (10) श्रीमति प्रतीभा जैन एवं श्री सुशील जैन वरिष्ठ अधिवक्ता(SC)

पुण्यार्जकः (1) श्री पंकज जी जैन(CMD पारस चैनल) दिल्ली (2) श्री प्रभात जी जैन सपरिवार, मुम्बई (3) श्री अशोक जी पाटनी, आर के मारबल्स सपरिवार, किशन गढ, उदयपुर... (4) गौ सेवक श्री राजेश जैन वापी एवं उनकी पूरी गौ रक्षक सैना।

विशेषः 1. यहां हमारे स्वयं सेवक आपको एक ज्ञापन की प्रतियां वितरित कर रहे हैं उनको भरकर अपने हस्ताक्षर के साथ अपना वोटर आईडी कार्ड नंबर और हो सके तो एक प्रति इसके साथ में संलग्न भी कर दें ताकि हम संयुत सरकार को प्रस्तुत कर सकें। 2. बाहर से पधारे सभी अहिंसा प्रेमियों के लिए 30 जनवरी को आहार एवं आवास की समुचित व्यवस्था है, कृपया अपने आने की अग्रिम सूचना SMS, ई-मेल (ahimsaarmy2@gmail.com) फोन पर अवश्य देने का कष्ट करें, ताकि आपकी समुचित व्यवस्था की जा सके। 3. इस कार्यक्रम का प्रसारण पारस,सुदर्शन आदि कई चैनलों पर Live भी होगा।

संपर्क सूत्रः (1) कार्यालयः 011-42445311,9643977260 (2) ब्रह्मचारीजी-8860667470 (3) संतोष-9654464085 (4) संजय-9312278313,9811102170

समय : राजघाट पर पूज्य बापू को श्रद्धांजलि प्रदान प्रातः 11 बजे। इसके पूर्व सामने समता स्थल के पास ग्राउन्ड पर अल्पाहार प्रातः 9:00 बजे से 10:30 तक उसके बाद वहां से हम सभी जलूस के रूप में जंतर मंतर पहुंचेगें, वहां 5:30 तक विशेष मुख्य कार्यक्रम तदुपरान्त भोजन।

णिग्गंथ वीयराया जिणमग्गे एरिसा पडिया। अर्थ- जिन प्रतिमा निर्ग्रन्थ, वीतराग होती है (बोधपाहुड, गा.10)

मुनिश्री प्रज्ञासागरजी व विशेषसागरजी के मिलन का साक्षी बना सनावद

सागर से सागर मिलन से बनता है महातीर्थ – प्रज्ञासागरजी

सनावद । महावीर तपोभूमि प्रणेता मुनिश्री प्रज्ञासागरजी महाराज व गणाचार्य श्री विरागसागरजी महाराज के शिष्य मुनिश्री विशेष सागरजी महाराज के वात्सल्य मिलन की साक्षी आचार्य वर्द्धमानसागरजी महाराज की जन्मभूमि सनावद बनी । ३० नवंबर रविवार को प्रात: ८.४५ बजे सिद्धवरकूट से विहार कर आ रहे मुनिश्री प्रज्ञासागरजी महाराज की आगवानी हेतु नगर में पूर्व से विराजित मुनिश्री विशेष सागरजी पहुंचे । बस स्टेण्ड पर दोनों मुनियों का वात्सल्य मिलन हुआ, उपस्थित समाजजनों ने जय–जयकार से आकाश गुंजायमान कर दिया । समाजजन जुलूस के रुप में लेने हेतु बडी संख्या में पहुंचे थे । नगर के श्री आदिनाथ जिनालय, वाचनालय स्थित चैत्यालय, श्री सुपार्श्वनाथ मंदिर, श्री पार्श्वनाथ दि.जैन बडा मंदिर के दर्शन कर मुनिद्वय श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन बडा मंदिर हाल में धर्मसभा को

संबोधित किया ।

पुण्योदय तीर्थ श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर ट्रस्ट, शिरसाड, विरार (पूर्व), जिला-थाना में शांति विधान एवं अहिंसा स्तम्भ का शिलान्यास सम्पन्न

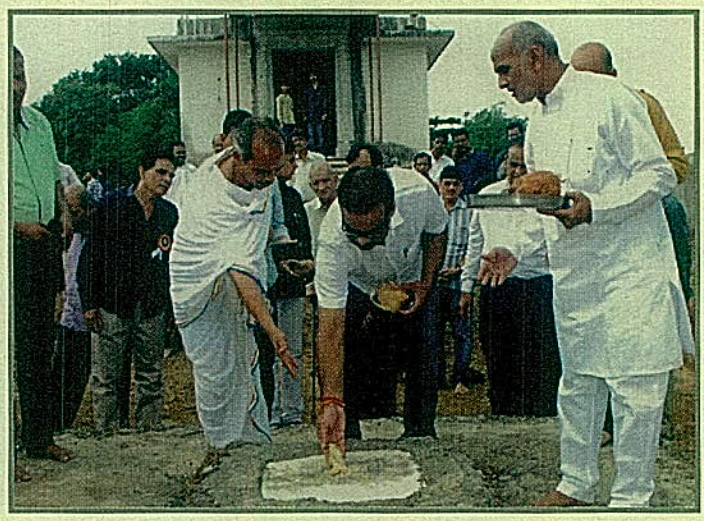

पुण्योदय तीर्थक्षेत्र शिरसाड-विरार (पूर्व) जिला- थाना (महा.) के नेशनल हाइवे नं. 8 में रविवार, दिनांक ..... को शांति विधान का भव्य आयोजन किया गया। सौधर्म इन्द्र बनने का सौभाग्य श्री अमृतलाल कोदरलाल जी शाह, वसई को मिला। पंडित पवन कुमार जैन, नाशिक से पधारे थे। प्रवचनकर्ता श्री अश्विनी ए.शाह (मालाड) उपस्थित थे।

समारोह अध्यक्ष श्री सतीश पी.शाह, दीप प्रज्ज्वलनकर्ता श्री जयंतीलाल दोशी, श्री माणेक के. जैन, स्वागताध्यक्ष श्री जसुभाई कोठारी, श्री राजेश सेठी, मुख्य अतिथि श्री रमेशभाई दोशी, श्री जयंतीलाल बक्षी, श्री [illegible] जैन, श्री सुनील शाह आदि महानुभाव उपस्थित थे।

समारोह में स्थानीय विधान सभा सदस्य वसई-विरार-नाला सोपारा क्षेत्र के माननीय श्री हितेन्द्र ठाकुर (एम.एल.ए.), श्री क्षितिज ठाकुर (एम.एल.ए.), महानगरपालिका के सभापति श्री सुदेश चौधरी, श्री प्रफुल्ल साने, नगरसेवक श्री साथिराज नाहटा जैन, श्री नयनभाई जैन (वकील) आदि स्थानीय नेतागण उपस्थित थे।

विकलांगों व विद्यार्थियों की सहायता

दिल्ली की प्रमुख समाजसेवी संस्था तरुण मित्र परिषद विकलांगों को तिपहिया साईकिलें, वृद्धों व विकलांगों को व्हील चेयर, विधवाओं को सिलाई मशीनें व पितृहीन मेधावी विद्यार्थियों को छात्रवृत्तियां प्रदान करेगी। परिषद के महासचिव अशोक जैन ने बताया कि इस सेवा कार्य में विकलांग विद्यार्थियों को प्राथमिकता प्रदान की जायेगी। जरुरतमंद पात्र तरुण मित्र परिषद, एफ–236, मंगल बाजार, लक्ष्मी नगर, दिल्ली–110092 पर आवेदन कर सकते हैं। यह सामान परिषद के 39वें वार्षिक समारोह में 28 दिसम्बर को प्रदान किया जायेगा।

अशोक जैन

महासचिव – तरुण मित्र परिषद

देवालय में विराजित जिनदेव तीर्थ हैं - यह व्यवहार का कथन है (योगसार, दो. 4)

सूरत में आचार्य श्री सुनीलसागरजी महाराज के सान्निध्य में सम्पन्न जैनेश्वरी दीक्षा

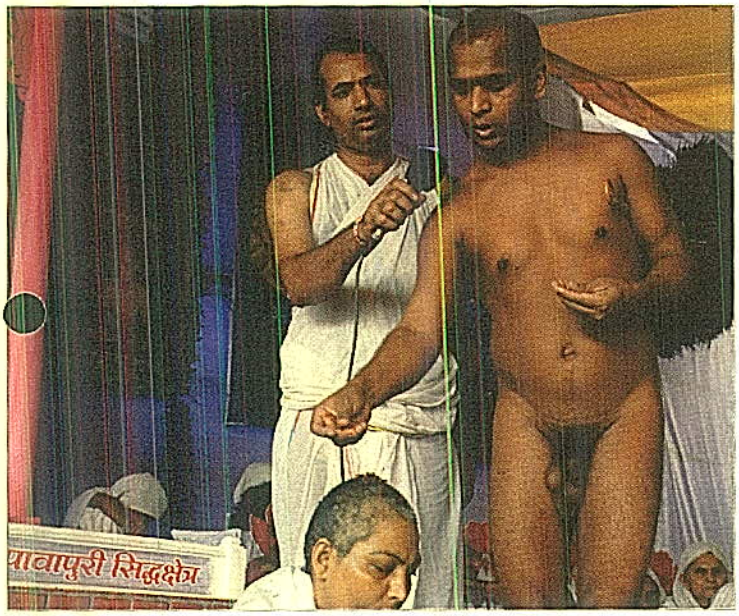

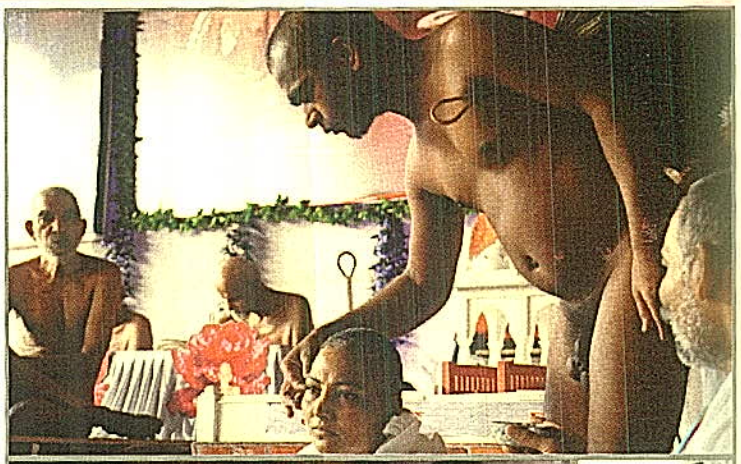

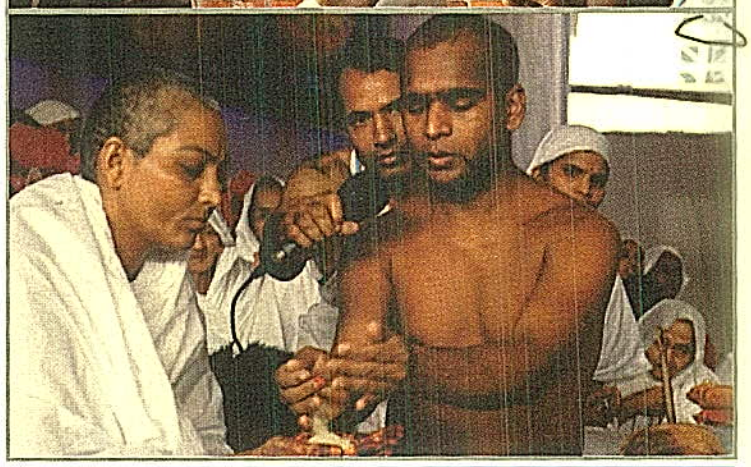

माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी को जैन साहित्य भेंट

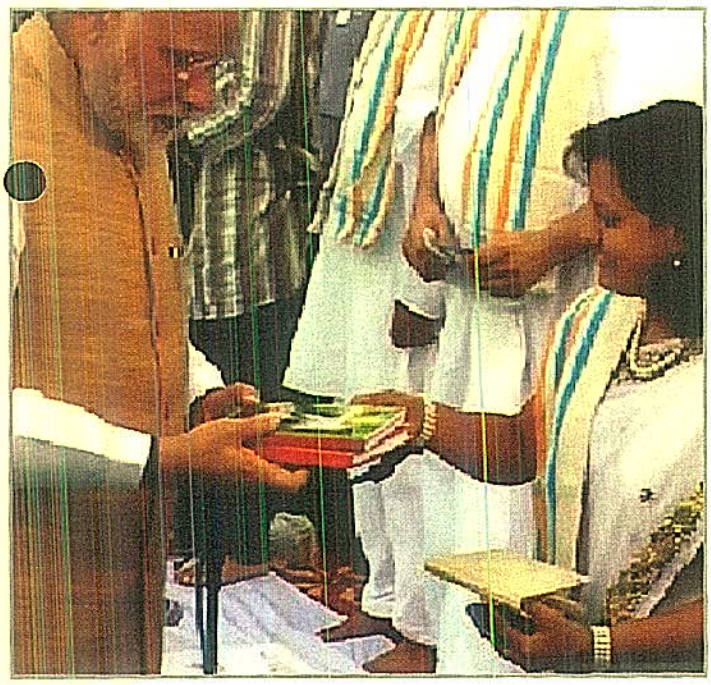

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी की अमेरिका और जापान यात्रा के बाद स्वदेश लौटने पर दिल्ली में आयोजित गांधी जयंती समारोह में श्रीमती डॉ. इन्दु जैन ने जैनधर्म एवं प्राकृत भाषा से संबंधित साहित्य मोदी जी को भेंट किया। बातचीत में माननीय मोदी जी ने डॉ. इन्दु जैन से कहा कि वे जैनधर्म एवं भगवान महावीर के संदेशों से बहुत प्रभावित हैं। भेंट की गई पुस्तकों में 1. जैनधर्म : एक झलक - लेखक डॉ. अनेकांत कुमार जैन, 2. प्राकृत भाषा विमर्श - लेखक प्रो. फूलचन्द जैन प्रेमी, 3. शौरसेनी प्राकृत भाषा एवं साहित्य का इतिहास- लेखिका डॉ. इन्दु जैन (सम्पूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी से प्रकाशित), 4. श्रमणाचार का सार- लेखक डॉ. अरिहन्त कुमार जैन - इन पुस्तकों का अवलोकन करते समय माननीय मोदीजी ने प्रसन्नता व्यक्त की एवं विनम्रतापूर्वक कहा कि मैं इन पुस्तकों को समय निकालकर अवश्य पढ़ूंगा। माननीय प्रधानमंत्री जी को जैन साहित्य भेंट करने पर अनेक शुभेक्षुओं ने डॉ. इन्दु जैन को बधाई दी।

यह ज्ञातव्य है कि विभिन्न अवसरों पर पूर्व राष्ट्रपति अब्दुल कलाम, श्रीमती प्रतिभा पाटिल, पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह एवं राष्ट्रपति प्रणव मुखजी को डॉ. इन्दु जैन (सुपुत्री प्रो. फूलचन्द जैन प्रेमी) जैन साहित्य भेंट कर चुकी हैं तथा पिछले अनेक वर्षों से गांधी जयंती, गांधी स्मृति दिवस एवं ज्ञानपीठ पुरस्कार जैसे राष्ट्रीय दिवसों पर जैनधर्म का प्रतिनिधित्व करते हुये जैन प्रार्थना एवं प्राकृत तथा अपभ्रंश भाषा में श्रुतदेवी सरस्वती की वंदना प्रस्तुत कर रही हैं।

प्रेषक - डॉ. अरिहंत कुमार जैन, मुंबई

दान, पूजा, तीर्थाटन आदि यदि सम्यग्ज्ञान से सुशोभित है तो वे मुक्ति के कारण हैं (उत्तर पुराण)

कोल्हुआ पहाड़ पर भव्य जिन बिम्ब विराजमान

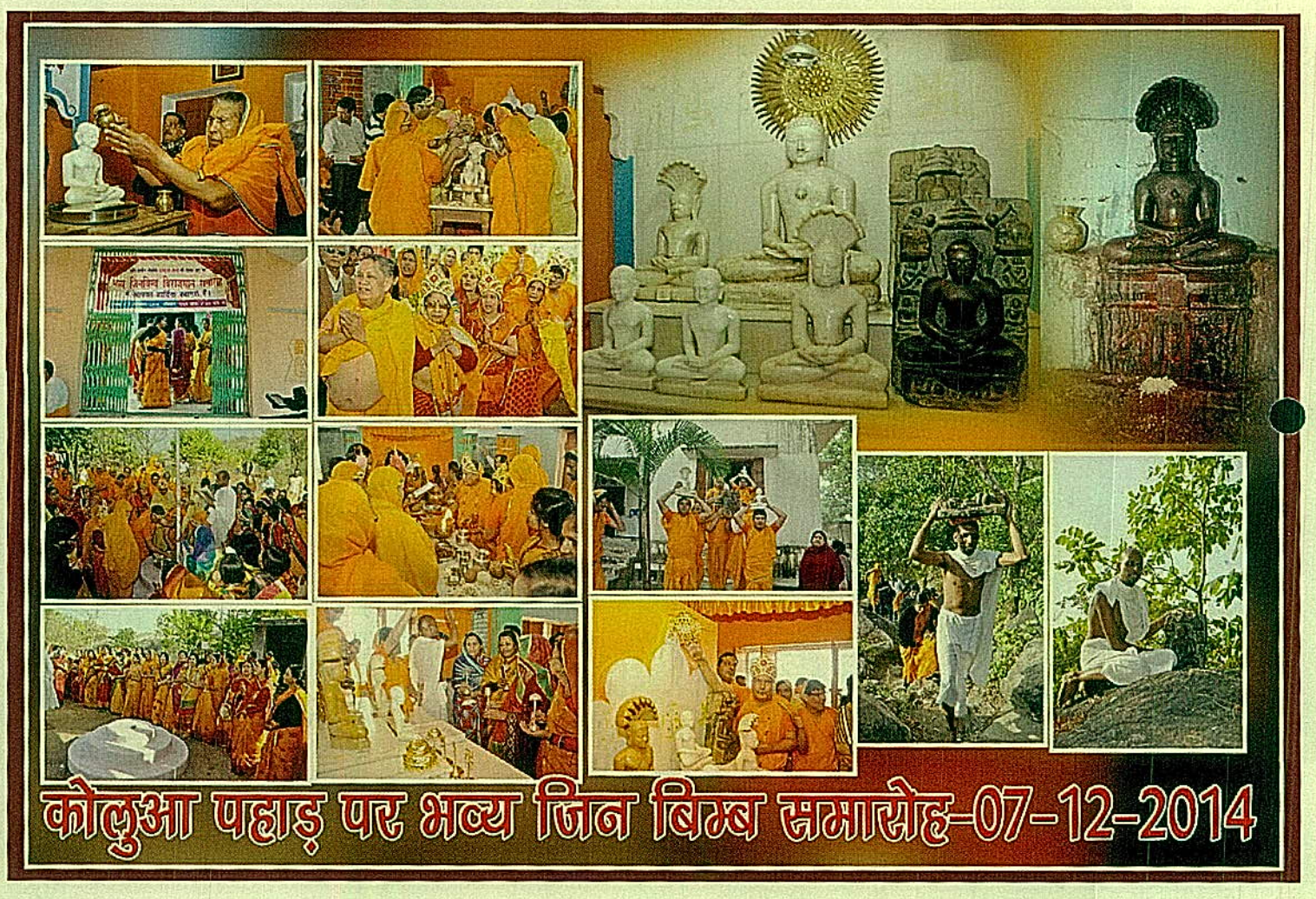

7 दिसम्बर - संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के परम प्रभावक शिष्य मुनिश्री 108 प्रमाणसागरजी महाराज के संघस्थ बा.ब्र.रोहित भैया जी के सान्निध्य एवं निर्देशन में अति प्राचीन क्षेत्र कोल्हुआ पहाड़ पर भव्य जिनबिम्ब विधि-विधान के साथ विराजमान किये गये।

बिहार में गया के निकट भगवान 1008 श्री शीतलनाथ से संबद्ध अतिप्राचीन इस पावन भूमि पर जहां पहाड़ पर 20 दिगम्बर जिनबिम्ब एक ही पत्थर पर उत्केरित है, वहीं भव्य जिनालय भी है। साथ ही तलहटी मे भी धर्मशाला एवं जिनालय है। एक अतिशयकारी अतिमनोज्ञ भगवान 1008 श्री पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा गुफा में पर्वत पर विराजमान है जो श्रद्धालुओं को सहज ही अपनी ओर आकर्षित करती है, पहाड़ पर तालाब एवं प्रकृति की रमणीय छटा सबका मन मोह लेती है।

प्रातःकाल पंडित राहुल शास्त्री एवं पंडित महेन्द्र जी जैन ने जाप्यानुष्ठान प्रारम्भ किया साथ ही 1008 शांतिनाथ महामंडल विधान हुआ। नीचे तलहटी मंदिर से 4 जिनबिम्ब (शीतलनाथ भगवान, शांतिनाथ भगवान, नेमिनाथ भगवान एवं पार्श्वनाथ भगवान) गाजे-बाजे के साथ नारे लगाते हुए पर्वतराज पर लेकर गए, वहाँ उम्मेदमल गौतम कला रांची द्वारा ध्वजारोहण कि गया। इसके बाद अभिषेक-शांतिधारा की क्रिया सम्पन्न करते हुए वेदी-शुद्ध सहित श्रीजी को वेदी में विराजमान किया।

श्री जी विराजमान करता क्रमशः श्री महावीर प्रसाद सोगानी (रांची), श्री मानिकचंद गंगवाल (रांची), श्री कन्हैयालाल सेठी (औरंगाबाद) एवं श्री अशोक पांड्या (गिरिडीह) ने परिवार के साथ यह सौभाग्य प्राप्त किया। बा. ब्र. रोहित भैया जी के कुशल नेतृत्व में सभी कार्य समय पर पूर्ण हुए। गया, रांची, कोडरमा, पटना, नवादा, गिरिडीह, कोलकाता, मधुबन, ईसरी और भी विभिन्न स्थानों से श्रद्धालुओं ने पहुंच कर अपनेपुण्य में वृद्धि की क्षेत्रीय मंत्री विजय छाबड़ा ने भी इस कार्यक्रम में अपना योगदान दिया। गया के युवकों ने आगंतुक अतिथियों के लिए उत्तम भोजन का प्रबंध किया वहीं श्री महावीर सोगानी, रांची ने तो इस कार्य को सफल बनाने में अपनी जी-जान लगा दी। आप सभी भी इस अतिप्राचीन क्षेत्र का दर्शन अवश्य करें।

- आर. के. जैन

दर्शन ज्ञान और चारित्रवान सभी जिनेश्वर भावतीर्थ हैं (मूलाचार, गा.562)

हमारे नये बने सदस्य

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी महापरिवार में हम हृदय की गहराईयों से आप सभी का स्वागत करते हैं, अभिनंदन करते हैं।

आजीवन सदस्य

Shri Veerkumar Kshemankar Jain, Indore

Shri Adeshkumar Babulal Jain, Indore

Shri Anil Hukumchand Jain (C.A.), Bhopa

Shri Dilip Pavankumar Jain, Bhopal

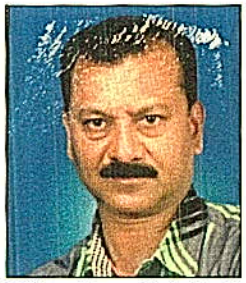
Shri Shantikumar Babulal Jain, Bhopal

Smt. Rekha Pradeep Kumar Jain, Bhopal

Shri Anil Kumar Basant Kumar Jain, Bhopal

Shri Hukamchand Samat Prakash Jain, Bhopal

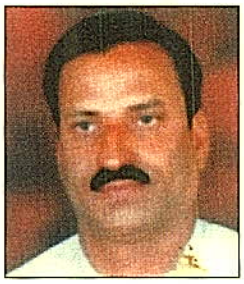
Shri Ramendra Kumar Amritlal Jain, Bhopal

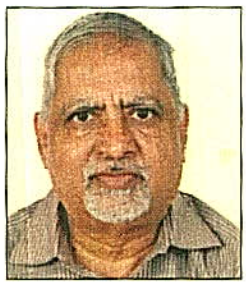
Shri Chandmal Keshrimal Bandi, Thane

Shri Dinesh Kaluram Jain, Bhopal

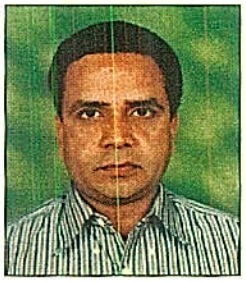
Shri Virendra Kumar Sobhagyamal Jain, Bhopal

Dr. Ankit Narendra Kumar Jain, Bhopal

Shri Abhishek Mahendra Kumar Jain, Bhopal

Dr. Pramod Prakashchandra Jain, Bhopal

Shri Bikki Kumar Garibdas Jain, Katni

Shri Dinesh Kumar Jain, Indore

Shri Pradeep Deepchand Badjatya, Indore

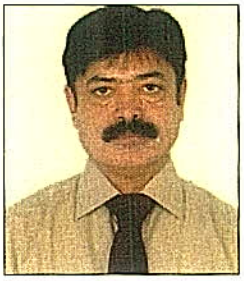
Shri Prashant Jain, Indore

Shri Bhagwat S/o Shri L.M.Jain, New Delhi

Shri Pawan Kumar Kishorilal Jain, Satna

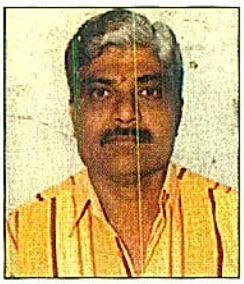
Shri Sanjay Kumar Nemchand Jain, Satna

Shri Rajendra Kumar Jain, Satna

Smt. Jyoti Sushil Kumar Jain, Satna

Shri Vimal Kumar Hukumchand Jain, Mumbai

सरलता, सादगी और सद्भावना ही जीवन का सही धर्म है।

आजीवन सदस्य

Sou. Mikita Anup Badjatye, Mumbai

Ku. Nikita Vimal Kumar Jain, Mumbai

Shri Sanjeev Dalchand Jain, Mumbai

Sou. Sonal Jatin Kumar Jain, Mumbai

Sou. Hetal Nitin Kumar Doshi, Mumbai

Smt. Sonia Kirit Doshi, Mumbai

Shri Sharad Venichand Jain, Mumbai

Smt. Jaya Kailashji Jain, Mumbai

Shri Shantilal Devchand Jain, Mumbai

Smt. Sonai Shantilal Jain, Mumbai

Shri Hitesh Pravin Parikh, Mumbai

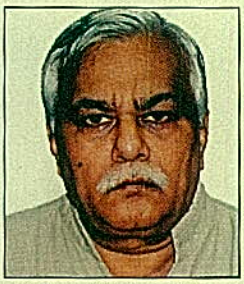
Shri Anil Ashwin Shah, Mumbai

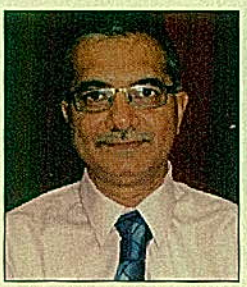
Shri Bhavin P. Parikh, Mumbai

Shri Dharmendra Manubhai Dani, Mumbai

Shri Vikrant Surendra Kumar Jain, Mumbai

Smt. Mamta Sanjay Jain, Mumbai

Smt. Nayana Pankaj Shah, Mumbai

Smt. Nita Chetan Shah, Mumbai

Smt. Priti Kirit Shah, Mumbai

Shri Kirit Pravinchand Shah, Mumbai

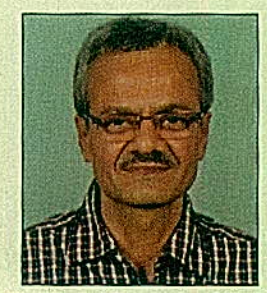
Shri Pankaj Pravinchand Shah, Mumbai

Smt. Deepa Pankaj Shah, Mumbai

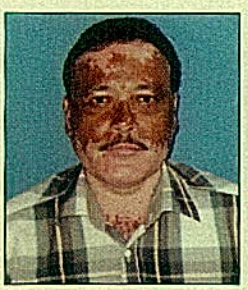
Shri Deependra Kumar Ratanlal Jain, Bhayandar

Smt. Sangita Dipendra Jain, Bhayandar

Shri Abhinandan Babasaheb Ashtage, Bhayandar

जिन लोगों ने तप करके शक्ति और सिद्धि प्राप्त कर ली है, वे मृत्यु को जीतने में भी सफल हो सकते हैं (तिरुवल्लूर)

आजीवन सदस्य

Shri Shobhit Santosh Jain, Thane

Smt. Rajni Santosh Jain, Thane

Shri Santosh Satishchandra Jain, Thane

Shri Nilesh Rajkumar Jain, Vashi

Smt. Sanmati Abhinandan Ashtage, Bhayandar

Shri Jivandhar Tarachand Ghodke, Savda

Shri Ravindra Bhaulal Jain, Savda

Shri Narendra Kumar Shantaram Saitwal Savda

Shri Ratnakar Padmalal Jain, Jalgaon

Shri Arun Devidas Jain, Jalgaon

Shri Rajendra Krishnaji Saitwal, Jalgaon

Shri Satish Ravindra Sakhare, Khadka

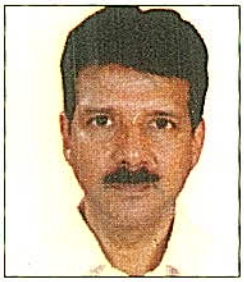
Shri Pramod Rajnikant Ladge, Kalwa

Shri Chandrashekhar Shanteram Awatare, Varangaon

Shri Kulbhushan Lalchand Band, Garkheda

Shri Yogendra Subhashchandra Manatkar(Jain), Shirpur

Shri Sanjay Narendra Kanhad (Jain), Shirpur

Shri Akshay Kumar Vasantrao Jogi (Jain), Haral

Shri Surendra Bhaskar Gosavi, Aurangabad

Shri Ravi Jawahar Deshmane, Akola

Shri Pradeep Keshrilal Dalvi, Akola

Shri Sandeep Dilip Wani, Akola

Shri Rahul Jainendra Ghodake, Jalgaon

Shri Nemichand Vithoba Jain, Jalgaon

Shri Bhavesh Popatlal Shah, Jalgaon

किं न स्यात्साधुसंगमात् (उत्तरपुराण, 62, 350)। अर्थ साधु के समागम से क्या नहीं होता है। अर्थात सभी कार्य व मनोरम सफल हो जाते हैं।

आजीवन सदस्य

Shri Prabhash Kumar Abhay Kumar Jain, Guna

Shri Jainendra Devlal Ghodke, Thane

Shri Sanjay Shantaram Saitwal, Dombivali

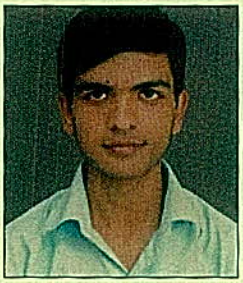
Shri Abhishek Omprakash Jogi, Mhasrul

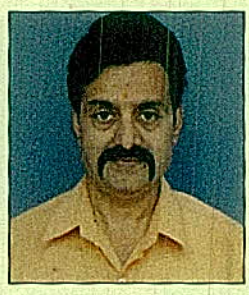
Shri Pradeep Kumar Pannalalji Gandhi, Thane

Pt. Bhagchandra Beerchandra Jain, Thane

Shri Rahul Rameshchand Mamatkar, Shirpur

Shri Pankaj Subhash Washimkar, Risod

Sou. Ranjana Bandopant Sontakke, Mhasrul

Shri Sudarshan Pradumn Kumar Belokar, Dasala

Shri Navinchandra Dharmchandra Belokar, Dasala

Shri Roopchand Ganpatrao Sanghai, Sengaon

Shri Vilas Trilokchand Jogi, Risod

Shri Vaibhav Keshavrao Kandi, Aurangabad

Shri Narendra Kumar Babusa Jain, Deulgaonraja

Shri Rajendra Sukhanand Patni, Washim

Shri Shekhar Adinath Nilkhe, Panchwati

Smt. Priti Shekhar Nilkhe, Panchwati

Shri Pradeep Dhondiba Hudwekar, Mhasrul

Shri Shital Kumar Jivan Bitode, Nashik

Sau. Manisha Mahendra Sawalkar, Thane

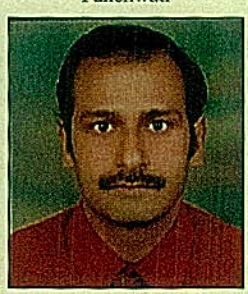
Shri Neeraj Kumar Jain, Guna

Shri Vinod Kumar Abirchand Jain, Guna

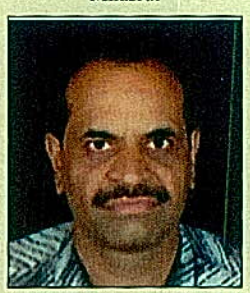
Shri Ajay Kumar Abirchand Jain, Guna

Shri Saket Surendra Kumar Jain, Guna

हमारा धर्म कथनी प्रधान नहीं, करनी प्रधान है।

आजीवन सदस्य

Shri Rajeev Kumar Surendra Kumar Jain, Guna

Shri Subodh Rameshchand Jain, Guna

Shri Rajesh Jain, Guna

Shri Abhishek Jain, Guna

Shri Shailendra Raman Jain, Guna

Shri Alok Virdhichandra Madvaria, Guna

Shri Pradeep (Banzhal) Jain, Guna

Shri Mahendra Kumar Madhukar Sawalkar, Thane

Shri Sanjay Kumar Gyanchand Jain, Kalwa

Shri Sunil Prabhakar Rao Gheware, Kaij

Shri Baburao Ganpati Pangal, Murud

Shri Jitendra Baburao Pangal, Murud

Shri Rajkumar Motilal Pangal, Murud

Shri Parshwanath Jindas Pangal, Murud

Shri Avinash Premchand Kamble, Murud

Shri Bhalchandra Baburao Kamble, Murud

Shri Rajendra Shankar Rao Kandarkar, Murud

Shri Santosh Bahubali Pangal, Murud

Shri Manoj Madhukar Rao Choubharkar, Murud

Shri Sukhanand Dhanya Kumar Sangole, Murud

Shri Satish Sudhakar Rao Madkar, Kalamb

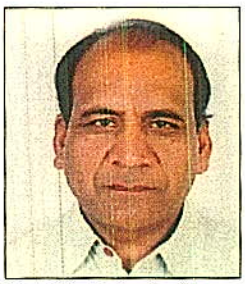
Shri Anil Prabhakar Rao Gheware, Kaij

Shri Rajendra Baburao Pangal, Thane

Sou. Archana Rajendra Pangal, Thane

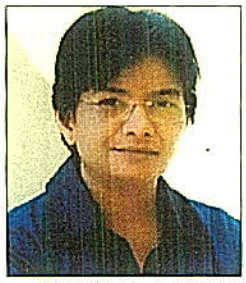
Kum. Vaishali Mohanlal Walchale, Washim

धन से सुविधायें मिल सकती हैं सुख नहीं।

आजीवन सदस्य

Shri Vaikos Digamber Dattatraya, Aurangabad

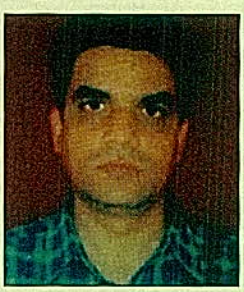
Shri Pankaj Dahyalal Shah, Mumbai

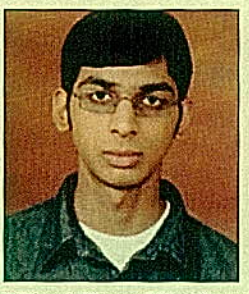
Shri Dinesh Kumar Vijay Sangve, Thane

Shri Sachin Suresh Waikos, Nashik

Shri Mahaveer Madhukar Rao Dhumale, Aurangabad

Shri Pinakin Ratilal Shah, Mumbai

Shri Amit Rajan Doshi, Mumbai

Shri Nandish Onkarlal Jain, Mumbai

Shri Rajkumarji Komalchandji Jain, Guna

Shri Mahaveer Pandya, Beenaganj

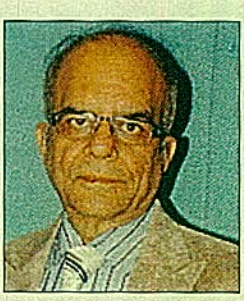
Shri Harsh Vardhan Gautamchand Jain, Aurangabad

Shri Mukund Mohanlal Walchale, Garkheda

Sou. Neetarani Dilip Gheware, Thane

Shri Savinay Anant kumar Mirkute, Garkheda

Shri Prakash Motiramji Jogi, Aurangabad

Shri Vijay Manikrao Rode, Aurangabad

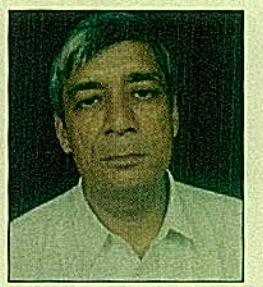
Shri Tejpal Premchand Jain, Thane

Shri Shreepal Amarchandji Jain, Thane

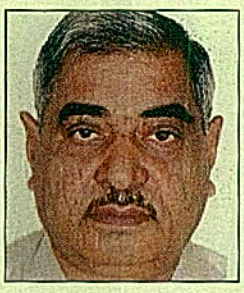
Shri Surendra Kumar Surajbhan Jain, Thane

Shri Sudhakar Bhikanrao Lakhpati, Garkheda

Shri Pramod Jasraj Bharal, Vashi

Mrs. Suman Pramod Bharal, Vashi

Shri Gaurav Dhanesh Kumar Jain, Navi Mumbai

Shri Kailash Motilal Jain, Mumbai

Shri Mahaveer Prasad Barjatya, Thane

किं न स्यात्साधुसंगमात् (उत्तरपुराण, 62, 350)। अर्थ साधु के समागम से क्या नहीं होता है। अर्थात सभी कार्य व मनोरम सफल हो जाते हैं।

आजीवन सदस्य

Shri Jatin Kumar Ashok Kumar Jain, Mumbai

Shri Sushil Shrikant Waykos, Aurangabad

Shri Sunil Shrikant Waykos, Aurangabad

Shri Dilip Velji Shah, Mumbai

Shri Sushil Ashok Kale, Aurangabad

Shri Pankaj Rajkumar Jain, Mumbai

Smt. Sadhana Dinesh Paronigar, Mumbai

Shri Abhishek Dinesh Paronigar, Mumbai

Shri Dinesh Kalyanchand Paronigar, Mumbai

Shri Ganeshlal Rajawat, Navi Mumbai

Shri Rahul Kailashchand Jain, Mumbai

Shri Ramesh Kumar Chhaganlalji Jain, Bhayandar

Shri Nitin Punamchand Shah, Bhayandar

Smt. Sunita Padam Kumar Dotiya, Mumbai

Shri Manoj Kumar Lalchand Doshi, Mumbai

Shri Pankaj Chandulal Doshi, Mumbai

Shri Abhinandan Kumar Madanlal Jain, Bhayandar

Shri Atul Jindatta Shah, Pune

Shri Ravindra Ratanchand Kondekar, Aurangabad

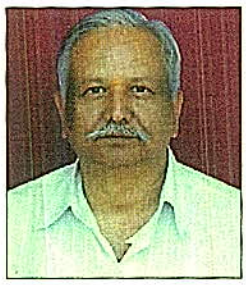
Shri Vardhman Dattatray Lokhande, Deolali

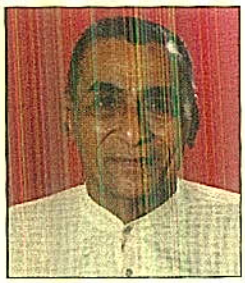
Shri Kishore Mavji Shah, Deolali

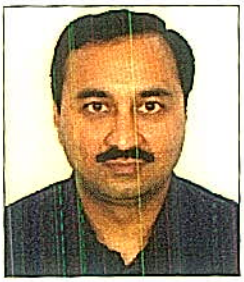
Shri Rajiv Kishore Shah, Mumbai

Shri Vijay Kumar Goutamraoji Aherkar, Aurangabad

Shri Pramod Prakash Dere, Aurangabad

Shri Jindas Ambadas Mogale, Aurangabad

किं न स्यात्साधुसंगमात् (उत्तरपुराण, 62, 350)। अर्थ साधु के समागम से क्या नहीं होता है। अर्थात सभी कार्य व मनोरम सफल हो जाते हैं।